Postal Regn No. JODHPUR/56/16-18
RNI No. : RAJHIN/2007/20875

Printing Date : 10-11 Mar 2017
Posting Date : 15-16 Mar 2017

चरम मंगल

हिन्दी मासिक पत्रिका

www.charammangal.com

वर्ष : 11 अंक : 03 मूल्य : ₹10

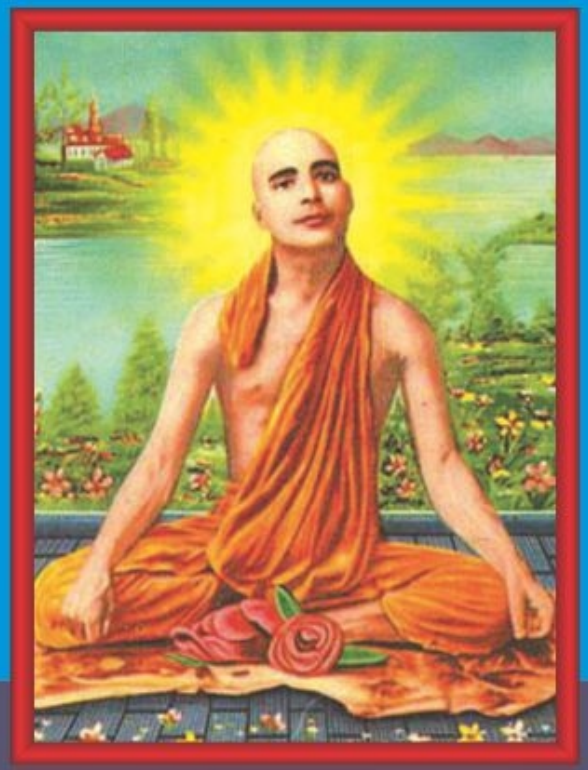

The real atman, the true God
is beyond the reach of
WORDS AND MINDS
: *Swami Ramtirth*

चरम मंगल

हिन्दी मासिक पत्रिका

स्वामी रामतीर्थ

वर्ष : 11 मार्च 2017 अंक : 03

सम्पादक मण्डल

संपादन सलाहकार	:	साधिका डॉ. पावनी	:	8003461829
प्रधान संपादक	:	अजय विराट	:	9352193809
सह-संपादक	:	सीमा संजय विराट	:	7891695978
प्रबंध संपादक	:	साधिका प्राग्भा विराट	:	9799985703
कार्यकारी संपादक	:	दीक्षिता विराट	:	8126344113

सम्मान राशि

संरक्षक	: ₹ 1,00,000
आधार स्तंभ	: ₹ 21,000
स्तंभ	: ₹ 11,000
आजीवन सदस्यता	: ₹ 2100

विज्ञापन मासिक

अंतिम पृष्ठ रंगीन	: ₹ 6000
पार्श्व पृष्ठ रंगीन	: ₹ 5000
मूल्य एक प्रति	: ₹ 10

(ज्ञान-पूजा राशि : श्रद्धा अनुसार)

'चरम मंगल' में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने निजी विचार है।
सम्पादक मण्डल का उनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं है।
अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता 'चरम मंगल' का आदर्श है।
किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जोधपुर होगा।

स्थाई पता :

जय गुरूदेव साहित्य

'एलार्का हाउस' 11वीं ई रोड, सरदारपुरा, जोधपुर

फोन : 0291-2433625; मो. +91-7891695978

e-mail : mail@charammangal.com

www.charammangal.com

संरक्षक मण्डल

श्री झूमर भंसाली (पाली)
श्री राज संकलेचा (मुंबई)
श्री निर्मल मोदी (सोजत रोड)

आधार स्तम्भ

श्री सुरेश अंजली बोहरा, पाली ; श्री सम्पतराज कोठारी, पाली
श्री ओमप्रकाश अरूण कु. कोचेटा, पाली
चीमा बाई लालचंद संचेती ट्रस्ट, पाली ; श्री उगम गांधी, पाली
श्री विजय भंडारी, जोधपुर ; श्री ज्ञानमल जैन (छाजेड़), जोधपुर
श्री लूणकरण बेताला, नागौर
श्री गौतम कुमार तन्मय तातेड़, बीकानेर
श्री सतीश जैन, दिल्ली ; श्री अशोक जैन जयचंदा, दिल्ली
श्री देवराज जैन (बिठमड़ा वाले), दिल्ली
श्री हेमचंद शिशिर जैन (बड़ौत वाले),दिल्ली
श्रीमती कला आर. सी जैन (टी.टी.), दिल्ली
श्रीमती नीलम प्रमोद जैन, दिल्ली ; श्री कीमतीलाल जैन, मेरठ
श्री आनंद चांदी वाला, दिल्ली ; श्री सुभाष ओसवाल, दिल्ली
श्रीमती संतोष नरेन्द्र जैन, पीतमपुरा, दिल्ली
श्री संजीव जैन (राकसेड़ा वाले) दिल्ली
श्री विजय कुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली
एड. संगीता शलभ जैन दिल्ली
श्री पवन कुमार जैन, हिसार
श्री पारसमल बागरेचा (जिणाणी) बैंगलोर
श्री जीवराज कैलाशचंद प्रकाश संचेती (बीजेनगर)
श्री जबर चंद श्यामसुखा, बेलगांव
श्री केशव लाल शाह, कानपुर
श्री भँवरलाल शाह, अहमदाबाद

स्तम्भ

श्री रिखबचंद जयंतिलाल सालेचा (इचलकरंजी),
श्री उत्तम श्रीश्रीमाल (सूरत), श्री रायचंद भंसाली (सिवाणा)
श्री उम्मेदराज चाम्बड़ (जोधपुर),श्री रमेश रंगा (जोधपुर),
श्री विजेन्द्रकुमार गुप्ता (दिल्ली), श्री अशोक माहना (दिल्ली)
डॉ. एच. बी. जैन (अहमदाबाद), श्री दशरथ जैन (हैदराबाद)
श्रीमती रमा जैन (अमृतसर), श्रीमती पूनम पदम जैन (अमृतसर)
श्री मानमल लसोड़ (पाली), श्री हस्तीमल जैन (गोखरू) (मुंबई)
श्रीमती नीलम विजय चौधरी (जम्मू), श्री महेन्द्र मुथा (नासिक)
श्री राजेश जैन अश्विनी जैन (समाना), श्री संजीव जैन, दादरी
श्री मायाकिशन माहेश्वरी (फिरोजाबाद)

सम्पर्क कार्यालय

समकित सेवा समिति,पाली (रजि.)
'भंसाली मेंशन'
50. ए तिलक नगर,
BSNL ऑफिस के सामने
पाली मारवाड़ (राज.) - 306401
विनय कोठारी. 918769522222
उगम गाँधी, . 919413371097

चरम मंगल ज्ञान सेवा समिति,
दिल्ली (रजि.)
श्री प्रमोदकुमार जैन(महामंत्री)
B-23; Sangam App.;Rohini - 9
नई दिल्ली - 110085
. 919650291593

श्री जयंती आर. सालेचा
11/508, बोहरा भवन,
गायत्री भवन के सामने,
इचलकरंजी (महाराष्ट्र) 416115
+ 919422414426

श्रीमती पूनम पद्म जैन
181 Green Farms, G.T. Road;
Amritsar
+ 91 9646422355

श्रीमती सीमा नाहर
Flat no. 001; I Floor
Saraogi Mansion,
24, II Cross ; Nehru Nagar
Bengaluru-560020
+ 919449815964

श्री सरित कुमार जैन
C-33; Jain Nagar; Meerut
+ 91 98976-68709

श्री सुरेन्द्र जैन
(महामन्त्री), कुरूक्षेत्र-हरियाणा
+ 919466436791

श्री अरूण कुमार जैन
इन्दु वाटिका, 171/1 साऊथ,
सिविल लाइन, मुजफ्फरनगर (यू.पी.)
+ 919219866815

स्वामी रामतीर्थ

कहाँ ! क्या !!

मंगलाचरण	07
संपादकीय	08
साहूनाद : सप्तर्षि रहस्य	10
गुरूजी कहते हैं..... : भाव प्रसारण बनाम कार्य व्यवहार	14
हमें जानना चाहिए : जीभ में श्रवण शक्ति	15
स्वामी रामतीर्थ-एक संक्षिप्त परिचय	16
स्वामी राम की वाणी	21
एक संबुद्ध चेतना-स्वामी रामतीर्थ	31
व्यवहारिक अमली वेदांत	35
सच्चा त्याग क्या है !	36
हमारे पास जो है, वह दिखाई नहीं देता	38
राम की खुमारी	39
'गुर उपदेशक में दोष दिखाई दे.....	44
इच्छापूर्ति का रहस्य	46
आत्मकृपा	47
आर्हत् गीता: तत्वार्थ सूत्र	49
जिज्ञासा समाधान	52
बुद्धि का चमत्कार	53
समाचार दर्शन	55

चरम मंगल सदस्यता फॉर्म

नाम .....

स्थाई पता.....

सदस्यता शुल्क.....

चैक/ड्राफ्ट/रसीद नं.....

बाबत.....

सभी पाठकों से अनुरोध है कि जिन्होंने सदस्यता शुल्क जमा नहीं करवाया है, वे इस फॉर्म को भरकर बैंक ड्राफ्ट द्वारा सदस्यता शुल्क जमा करवा सकते हैं अथवा 'जय गुरूदेव साहित्य' सिंडिकेट बैक खाता सं.84001010005470 में जमा करवा कर यह उपरोक्त फार्म हमें भेज दें।

नोटः ड्राफ्ट 'जय गुरूदेव साहित्य' के नाम से जोधपुर (राज.) में स्थित किसी भी बैंक-शाखा का बनाकर स्थाई पते पर भेजें अन्यथा
सिंडिकेट बैंक A/c No. 84001010005470,
Main Branch, Jodhpur;
IFSC : SYNB0008400 में जमा करा दें।

चरम मंगल पत्रिका **ONLINE** पढ़ने के लिए
एवं अन्य जानकारियों के लिए
VISIT करें

www.charammangal.com

प्रतिदिन साध्वी वैभवश्री 'आत्मा' जी म.सा. के प्रवचन एवं अन्य जानकारियाँ प्राप्त करने के लिए सब्सक्राइब करें

+91-7417000878 www.facebook.com/charammangal

YouTube www.youtube.com/charammangal

मंगलाचरण

मुझे मेरी मस्ती कहाँ.....

– स्वामी रामतीर्थ

मुझे मेरी मस्ती कहाँ ले के आई,
जहाँ मेरे अपने सिवा कुछ नहीं है।

लगा जब पता मुझको हस्ती का अपना
बिना मेरे सारा जहाँ कुछ नहीं है।
सभी में सभी से परे मैं ही मैं हूँ
सिवा मेरे अपने यहाँ कुछ नहीं है।।1।।

न दुःख है न सुख है, नहीं शोक कुछ भी
अजब है यह मस्ती, पिया कुछ नहीं है।
यह सागर यह लहरें, यह बुदबुदा भी
यह कल्पित है जल के, सिवा कुछ नहीं है।।2।।

है आनंद आनंद, है रूप मेरा,
है मस्ती ही मस्ती, यहाँ कुछ नहीं है।
यह पर्दा दुई का, हटा के जो देखा,
सभी एक मैं हूँ, जुदा कुछ नहीं है।।3।।

संपादकीय

ज्ञानियों के बारे में कुछ कहना या लिखना असंभव-सा प्रतीत होता है। उनका बाहरी रंग-रूप अति साधारण होता है, जिसे देखकर उनकी विलक्षणता का अनुमान नहीं लगाया जा सकता। शब्दातीत को शब्दों की परिधि में समेटने का प्रयास निरर्थक है। ऐसे ज्ञानी व जाग्रत महापुरूषों के लेश्यावलय को कोई-कोई साधक आत्मा अनुभूत कर पाती है।

एक बार आत्मज्ञानी श्री विराट गुरूजी से किसी ने पूछा कि 'गुरूजी ! ज्ञानी की पहचान कैसे हो?' तब गुरूदेव ने कहा कि 'पर्युपासना से'; उनके समीप बैठकर उनको सुनो। गुरू की कृपा से ही तुम गुरू को पहचान सकते हो और वह भी उतना ही जितना कि वह तुम पर प्रकट होना चाहे, अन्यथा नहीं। हमने भी गुरूदेव श्री जी को उतना ही जाना, जितना कि उन्होंने चाहा। खैर, वैसे भी उनको जानना महत्वपूर्ण है भी नहीं। ज्ञानी या गुरू की कृपा से हम खुद को जान पाएँ, यही महत्वपूर्ण है। ज्ञानी गुरू की पर्युपासना कर के अपनी ज्ञान पिपासा को शांत कर मुक्ति यात्रा की ओर अग्रसर हो सकें, यही महत्वपूर्ण है। ज्ञानी संतों की प्रत्यक्ष उपस्थिति हर समय हर किसी को मिल पाए, यह स्यात् संभव न हो किन्तु उनकी वाणी अमर होती है।

जनसाधारण को प्रेरणा ज्ञानियों की वाणी से ही मिल सकती है। इसके अलावा और कोई ज़रिया संभव भी नहीं। 'मार्च' अंक वेदांत दर्शन के महान संत 'स्वामी रामतीर्थ' को समर्पित कर 'चरममंगल' ऐसा ही प्रयास कर रहा है।

'वेदांत' शब्द अपने आप में दो शब्दों को समाहित किए हुए है। वेद का अर्थ है ज्ञान और अंत यानि समाप्ति। जब ज्ञान पूर्णतया समाप्त होता है, तो वेदांत घटित होता है, जिसे ब्रह्मज्ञान कहा गया है और जैन दर्शन में इसे ही 'केवल ज्ञान' कहा गया है। केवल ही ब्रह्म है, अस्तित्व है, जो शाश्वत है, जो अदृश्य है, शिव है। वेदांत को अपने भीतर अनुभव करने वाले इस महान निर्भीक संत को शत्-शत् वंदन।

संतों की आंतरिक अवस्था का अनुमान लगाना मानो तट से समुद्र की गहराई बताने के समान है, जिसकी चर्चा करना भी उनकी आशातना है। उनकी वाणी का श्रवण करना मात्र ही, हमारे अन्तर् की ज्योति को जगाने में सक्षम है क्योंकि उनके शब्द भी सचेतन होते हैं, अतिशयपूर्ण होते है। इसीलिए ज्ञानियों की वाणी की महत्ता है। भारतवर्ष में ऐसे कई धर्मपंथ हैं जो किसी व्यक्तिरूप की आराधना करने की बजाय मात्र उनकी वाणी को घट में उतारते हैं। उनकी वाणी, जो की ग्रंथ रूप में संकलित है, वही उनकी उपासना का केन्द्र है। जैसे सिखों की गुरू ग्रंथ साहिब, मुसलमानों की कुरआन, ईसाइयों की बाइबिल।

ज्ञानी गुणीजनों की वाणी हमारे जीवन को परिवर्तित करे, इसी मंगल मनीषा के साथ 'चरम मंगल' का मार्च अंक सुज्ञजनों की सेवा में प्रस्तुत है।

!!जय हो!!

दीक्षिता विराट

सप्तर्षि रहस्य

-साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

ऊपर के चित्र में हम देख सकते हैं-मध्य में केन्द्र है, जो ध्रुव है। उसके चारों ओर सात वृत्त है। प्रत्येक वृत्त जीवन के एक विशेष दौर का प्रतिनिधित्व कर रहा है। जब बालक का जन्म होता है, तब उसे सबसे अधिक प्रिय होता है-माँ का दूध, माँ की गोद। माँ उसके जीवन का केन्द्र होता है। माँ बालक को

छोड़कर कहीं इधर-उधर व्यस्त हो जाए और बालक यदि नींद में है तो बात अलग है अन्यथा वह माँ के लिए रोना शुरू कर देगा। माँ उसे गोद में ले ले और दूध देने लगे तो वह चुप हो जाएगा, शांत हो जाएगा। चलने के प्रयास में बालक गिर पड़ा है, रोने लग जाएगा किंतु माँ पुकार ले तो शांत हो जाएगा। आप बालक की क्रीड़ाओं को देखिए, उसका जीवन 'माँ' के इर्द-गिर्द ही है। वह उसके आनंद का, परम सुख का स्रोत है। किंतु ऐसा कब तक ? बस थोड़े ही समय तक।

थ्फर बालक कुछ बड़ा होगा। चलने-फिरने लगेगा। खेलने लगेगा। अब वह माँ की गोद के बिना भी घंटों रह लेता है, बस उसको खिलौने दे दीजिए। अब उसका सुख केन्द्र माँ के दूध से हट गया, खिलौने पर टिक गया। प्रकृतिगत व्यवस्थाएँ सदैव विकासमान होती है। बालक बढ़ता जाता है। जो उसके लिए सर्वाधिक सुख का आधार बनता है, वह विषय बिंदु भी बदलता जाता है। बालक जब खिलौनों से प्यार करता है, तब यदि कोई उसके खिलौने तोड़ दे, गिरा दे, उठा ले तो वह बेचैन हो जाता है। व्यग्र हो जाता है। रोने-चिल्लाने लगता है। हकीकत यह है कि वे खिलौने उसके लिए मात्र मिट्टी या लकड़ी के खिलौने ही नहीं होते, इन खिलौनों में उसका अपनत्व होता है। उसके प्राण बसते हैं।

वे खिलौने तब छूट जाते हैं, जब बालक विद्याशाला (school) में जाना शुरू कर देता हैं। अब उसकी क्रीड़ा खिलौनों से नहीं वरन् शब्दों व चित्रों से होनी प्रारंभ हो जाती है। वह मित्र बनाता है। मित्रों के साथ खेलता है। उसके सुख का केन्द्र अब माँ नहीं रही, खिलौने नहीं रहे बल्कि मित्र हो गए हैं। स्कूल में पढ़ना, आगे बढ़ना, ज्यादा से ज्यादा जानकारियाँ इकट्ठी करना, प्रतिस्पर्धा में प्रथम आना, आदि-आदि उसके सुख का केन्द्र बनने लग गए हैं। किंतु ज़िंदगी के इस दौर से भी वह गुज़र कर और आगे बढ़ता है। उसकी इच्छाएँ विस्तृत होती है। वह कुछ करके दिखाना चाहता है। बड़ा आदमी बनना चाहता है, धन इकट्ठा करना चाहता है। अपनी योग्यता से धनोपार्जन करने में वह अपना आनंद एवं सुख खोजता है।

यहाँ उसके जीवन का चौथा वृत्त चल रहा होता है। अब यदि वह धन कमा पाता है तो स्वयं को सुखी एवं सफल समझता है। अन्यथा उसको अपना

जीवन बोझ एवं चिंताओं का पिटारा लगता है। वह स्वयं को भाग्यहीन समझ बैठता है। कई लोग इस वृत्त के दौर से गुज़रते समय इतने अधिक निराश-हताश हो जाते हैं कि अपनी ज़िंदगी से ही ऊब जाते हैं। घृणा से भर जाते हैं एवं मौत के मुँह में भी चले जाते हैं। ऐसे में उनके पारिवारिक जन उसे निराशा से छुटकारा दिलाने के लिए रंगीन सपने दिखाते हैं। उसकी शादी की चिंता करते हैं और यहाँ से जीवन का पाँचवा वृत्त शुरू होता है।

पाँचवा वृत्त स्त्री/पत्नी के इर्द-गिर्द घूमता है। अब उसके जीवन का सुख केंद्र अच्छी पत्नी की प्राप्ति, पत्नी का प्रेम बन जाता है। किसी समय उसके लिए माँ का प्यार, सबकुछ होता था, अब उसके लिए अपनी पत्नी का प्यार सब कुछ है। वह पत्नी के लिए माँ को भी छोड़ने को तैयार है। घर भी छोड़ सकता है, यार-दोस्त भी छोड़ सकता है। अपनी पिछली उपलब्धियों को वह गौण कर देता है। उस पत्नी के लिए सब कुछ कुर्बान कर देने को तत्पर हो जाता है। किंतु जीवन यात्रा यहाँ से भी आगे बढ़ती है। पत्नी के साथ-साथ वह स्वयं अपना विस्तार चाहता है। संतति चाहता है। संतान के माध्यम से स्वयं को फैला हुआ, बढ़ा हुआ, कुछ अधिक शक्तिसंपन्न देखना चाहता है। अब वह पुत्र में ही अपना सर्वस्व देखता है। पुत्र प्राप्ति को बहुत बड़ा सुख समझता है। प्रायः स्त्रियाँ तो पुत्र प्राप्ति के बाद पति को भी गौण कर देती है। अब उनका सुख केन्द्र पति नहीं, पुत्र बन जाता है। पुत्र में उनके अपने प्राण बसते हैं। वे उस पुत्र के लिए सबकुछ करने को तैयार हो जाती हैं।

धीरे-धीरे पुत्र बड़ा होता है, पढ़ता-लिखता है। किशोर और वयस्क बन जाता है। अब वह माता-पिता की इच्छाओं व मान्यताओं के विरूद्ध भी चलने लगता है। ऐसे में वे ही माँ-बाप जो संतान के लिए सब कुछ त्याग करते थे, अब उस संतान की जीवनशैली से दुःखी हो उठते हैं। कदाचित् संतान उनके यश के विरूद्ध, उनकी मान्यता अथवा संस्कार के विरूद्ध कोई कर्म कर ले तो वे अपनी संतान की भी कुर्बानी कर देते हैं। उन्हें संतान की कुर्बानी मंजूर है किंतु अपने मान-प्रतिष्ठा-यश की कुर्बानी वे नहीं देख सकते।

प्रायः समाज में ऐसी घटनाओं से हम रू-ब-रू होते रहते हैं। आदमी हर एक सुख केन्द्र को छोड़ता जाता है, दूसरा बनाता जाता है। कालांतर में वह दूसरा भी छूट जाता है और अन्य बन जाता है किंतु आदमी इस तथ्य को समझ

नहीं पाता कि बाहर का कोई भी सुखकेन्द्र उसका वास्तविक केन्द्र नहीं था। उसका अपना नहीं था। यदि अपना होता, वास्तविक होता तो वह छूटता क्यों, बदलता क्यों ? मगर प्रकृति की व्यवस्था ही कुछ ऐसी है कि जीवन में पकड़ा हुआ हर पदार्थ, प्रकृति छुड़वा देती है। प्रकृति इंसान की हर चीज़ की कुर्बानी करवाती है। किंतु इंसान हर बार नई-नई पकड़ बनाता जाता है। वह पुराना केन्द्र छूट जाने पर नया केन्द्र बना लेता है, किंतु अपनी प्रियता व अप्रियता के मनोभावों को कभी नहीं छोड़ता।

प्रत्येक धर्म व अध्यात्म मनुष्य को स्वेच्छा से कुर्बानी करने की प्रेरणा देता है। ईस्लाम धर्म में इस कुर्बानी को बहुत महत्व दिया गया है, किंतु लोग अपने 'में मना' की कुर्बानी तो करते नहीं और बाज़ार से बकरा (मेमना) खरीद कर अल्लाहताला की राह में उसकी कुर्बानी कर देते हैं। वे समझते हैं कि इस प्रकार हमने धर्म का पालन कर लिया। हमने कुर्बानी की रीति का, नियमों का पालन कर लिया जबकि कुर्बानी का रहस्य यह है कि जो वस्तु, विधा, व्यक्ति अथवा स्थिति व्यक्ति को सर्वाधिक प्रिय है, वह जिसे मानसिक रूप से सर्वाधिक चाहता है, उसका पूरे मन से त्याग कर दे। पूरे मन से उसके प्रति निःसंग हो जाना कुर्बानी है। यदि आप नहीं छोड़ेंगे तो प्रकृति आप से मजबूरन छुड़वाएगी। और तब उस मजबूरी की अवस्था में आप आर्त्त बनेंगे, व्यग्र होंगे, चिंतित एवं परेशान होंगे इसलिए जीवन के प्राकृत क्रम को समझते हुए जो व्यक्ति इन सातों वृत्तों के घेरों से निर्लिप्त हो जाता है, मात्र वही व्यक्ति निज केन्द्र को उपलब्ध हो पाता है। व्यक्ति के आनंद का केन्द्र उसके भीतर ही है, बाहर तो उसकी प्रतिच्छाया मात्र है। जो बाहर दिखलाई देता है, हकीकत में वह मात्र दृष्टि भ्रम है।

व्यक्ति आत्म सम्मोहित होकर इन सातों केन्द्रों में अपना अस्तित्व ढूंढता है, अपना आनंद ढूंढता है। अंतिम वृत्त 'यश' के लिए तो वह अपना सब कुछ दाँव पर लगा देता है। अपने पुत्र एवं परिवार को भी यश प्राप्ति के लोभ में कुर्बान कर देता है। यदि वह इस यश के लोभ से निरपेक्ष हो जाए, ऐसा सोचने लगे कि 'दुनिया मुझे सराहे तो मेरा क्या' और 'धिक्कारे तो मेरा क्या' तो वह व्यक्ति स्वाधीन हो सकेगा। वह निज गुप्त केन्द्र को उपलब्ध हो पाएगा। इन सातों वृत्तों से हम निःसंग एवं निरपेक्ष बनें, तब ही जीवन विराट होगा। ऐसा ही हो।

स्थायी स्तंभ

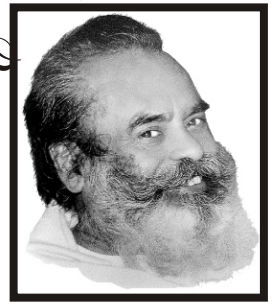

गुरूजी कहते हैं

आत्मज्ञानी पूज्य श्री विराट गुरुजी

भाव प्रसारण बनाम कार्य व्यवहार

भाव प्रसारण सदा अक्रम व मुक्त होना चाहिए तो कार्य व्यवहार सदा क्रमबद्ध नियमानुसार।

शरीर, मन व समाज हमेशा क्रमबद्ध सलीके का आदी होता है। हर सामाजिक व्यवस्था एवं उसकी समझ क्रमबद्ध तरीके से ही संभव है। हमें शासन (व्यवस्था) के साथ अनुशासनयुक्त ही रहना पड़ेगा। अन्यथा आप के कार्य को कोई दूसरा व्यक्ति न तो समझ ही पाएगा, न सुव्यवस्थित व बाधारहित संपन्न कर पाएगा। यह सफल जीवन के लिए बहुत ही आवश्यक शैली है।

मगर भाव प्रसारण में किसी भी सूरत में क्रमबद्धता नहीं होनी चाहिए। वहाँ न कोई क्रम, न कोई शर्त, न कोई शंका, न कोई अपेक्षा, न कोई विचिकित्सा (योजना) हो। अन्यथा आप के भाव कमज़ोर हो जाएँगे। भाव भाव न रह कर मात्र विचार बनकर मानसिक बियाबान में भटक जाएँगे। यही इच्छा (मानसिक) व भाव (आत्मिक) का भेद है। यह इच्छा सिद्धि-लब्धि का राज़ है। यह वर्तमान में जीने की कला है। यही आत्मशक्ति का अक्रम विज्ञान है। यही क्रमबद्ध सृष्टि पर्याय को जीतने का साधना मार्ग है। वरना जो भी रास्ता संसार चक्र में भटकाता है, वही मुक्ति का मार्ग भी है।

जय हो ! ! आपका कल्याण हो ! !

जीभ में श्रवण-शक्ति

आयुर्वेद के महान् आचार्य काश्यप कौमारभृत्य चिकित्सा के क्षेत्र में प्रसिद्ध आचार्य हुए हैं। उन्होंने एक बात लिखी-जैसे हमारे हाथ दो होते हैं, वैसे ही हमारी जीभ भी दो होती है। वह दो भागों में बँटी होती है। जीभ के एक भाग का काम है चखना और दूसरे भाग का काम है सुनना। उनका कहना है-कान सुनता नहीं है। वह तो केवल ध्वनि को ग्रहण करता है। वह तो केवल रिसेप्टिव (receptive) है। ग्रहण करने का माध्यम मात्र है। वह ध्वनि को ग्रहण करता है और जीभ तक पहुँचा देता है। वास्तव में जीभ ही सुनती है। उन्होंने अपने मत के समर्थन में एक महत्वपूर्ण तर्क दिया कि कोई आदमी बहरा है तो यह अनिवार्य नहीं कि वह गूँगा भी हो। किंतु जो गूँगा है उसका बहरा होना अनिवार्य है।

जो जीभ से बोल नहीं सकता, वह गूँगा होता है और जो कानों से सुन नहीं सकता, वह बहरा होता है। जो बहरा है वह बोल भी सकता है, किंतु जो गूँगा है वह बोल नहीं सकता तो सुन भी नहीं सकता। जिसकी जीभ विकृत है, जो बोल नहीं सकता, गूँगा है, वह निश्चित ही बहरा भी होगा। यह अटल नियम है। उन्होंने बताया गूँगा व्यक्ति इसीलिए बहरा होता है क्योंकि उसकी जीभ विकृत है, वह सुन नहीं पाती। कान ठीक है। वे ध्वनि को ग्रहण कर जीभ तक पहुँचा देते हैं, किंतु जीभ पकड़ नहीं पाती, इसलिए आदमी सुन नहीं पाता। इसलिए जो गूँगा है, उसका बहरा होना ज़रूरी है और जो गूँगा नहीं है, जीभ में सुनने की शक्ति है, पर जिसका कान विकृत हो जाता है, वह ध्वनि को जीभ

(शेष भाग पृष्ठ संख्या 37 पर)

स्वामी रामतीर्थ

एक संक्षिप्त परिचय

स्वामी रामकृष्ण परमहंस की ही तरह एक अल्हड़, निर्भीक संत ने पंजाब प्रांत के गुजराँवालाँ जिले में मुरालीवाला नामक गाँव में (22 अक्तूबर सन् 1873 ई.) संवत् 1930 वि. में जन्म लिया था। उनके बचपन का नाम तीर्थराम था और संन्यास का नाम रामतीर्थ था। संन्यास आश्रम में पैर रखकर वे दुनिया के लिए उलटे हो गए। उनका नाम उलटा हो गया, नाम बदल गया। यदि विचारपूर्ण दृष्टि से उनके जीवन का अध्ययन किया जाय तो ऐसा लगता है कि वे प्रसिद्ध मध्यकालीन वेदांती महात्मा मधुसूदन सरस्वती के अभिनव संस्करण थे। जिस तरह मधुसूदन ने आत्म दर्शन के गहरे तत्व की छान-बीन कर भगवान के सगुण रूप के सौंदर्य पर चकित होकर 'कृष्णात् परं किमपि तत्वमहं न जाने' की घोषणा कर दी, उसी तरह स्वामी रामतीर्थ ऐसे आत्मतत्ववेत्ता थे, जो सागर की ओर बहने वाली भगवती रावी के पवित्र तट पर टहलते समय आकाश में काली-काली घनघोर घटा देखकर समाधिस्थ हो उठे, 'हे कृष्ण, हे घनश्याम, श्याम रंग का बादल आप ही का रूप है, यह मुझे आकुल कर रहा है।' अचानक उनके 'गोलू यार' भगवान कृष्ण ने उन्हें स्नान करते समय दर्शन दिया तथा परस्पर गाढ़ालिंगन के बाद अदृश्य हो गये। आत्मतत्व में परमात्मातत्व का दर्शन उनके सरीखे संत ही किया करते हैं। रामकृष्ण के बाद मस्त संतों में उन्हीं का नाम लिया जाता है। वे महान् साधक, ईश्वरभक्त और तपस्वी थे। आत्मा को विश्वात्मा में मिलाने में ही उन्होंने अपनी साधना की परम प्राप्ति की, सिद्धि पायी।

स्वामी रामतीर्थ की बाल्यावस्था में ही ज्योतिषयों ने घोषणा कर दी

थी कि यह बालक सांसारिक सुख-दुःख को लात मार कर परमानंद के सागर में तैरेगा। उनके पिता गोसाई हीरानंद स्वभाव के सीधे-सादे पर प्रकृति के क्रोधी थे। वे उन्हें अपने कठोर नियंत्रण में रखते थे। कभी-कभी बालक तीर्थराम उनके साथ मंदिरों में भी जाया करते थे और भगवान की पूजा-आरती देखकर उनका मन श्रद्धा और भक्ति से नाचने लगता था। नयनों में अश्रु कण आ जाते थे। वज़ीराबाद के पण्डित रामचंद्र की कन्या से दस साल की ही अवस्था में उनका विवाह कर दिया गया। चौदह साल की अवस्था में गुजराँवालाँ हाई स्कूल से प्रथम श्रेणी में प्रवेशिका की परीक्षा पास कर पिता की असम्मति होने पर भी वे लाहौर के मिशन कॉलेज में भर्ती हो गए। उनका शिक्षाकाल कठोर-से-कठोर अग्नि परीक्षा का समय था। घर से एक पैसे की भी सहायता न मिलती थी। तपोमय जीवन के फलस्वरूप वे संवत् 1952 वि. में गणित में एम.ए. हो गए। स्यालकोट में साधारण अध्यापक के पद पर काम करने लगे और बाद में लाहौर के फोरमैन क्रिश्चियन कॉलेज में गणित के अध्यापक पद पर उनकी नियुक्ति हो गई। उनके हृदय में प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति बड़ा अनुराग था। वे उससे आध्यात्मिक प्रगति के लिये असाधारण प्रेरणा पाते थे। उनके चरित्र-विकास पर एक अनपढ़ देहाती भगत धन्नाराम का बड़ा प्रभाव पड़ा था। गणित के अध्यापक के पद पर काम करते-करते भी वे मन-ही-मन मौन, एकांत ध्यान, चिंतन, गीता पाठ आदि का अभ्यास कर अपने आराध्य भगवान श्री कृष्ण की पूजा किया करते थे। कभी-कभी तो उनकी भावुकता इस सीमा तक बढ़ जाती थी कि गणित का सिद्धांत भूलकर वे विद्यार्थियों को 'कृष्ण-कृष्ण' पढ़ाने लगते थे। श्यामपट पर उनका चित्र उतारने लगते थे।

उन्होंने लाहौर में ही अपने निवास-स्थान पर एक अद्वैतामृतवर्षिणी सभा की स्थापना की। उसमें साधु-संत ही सम्मिलित होते थे। स्वामी रामतीर्थ की आत्मसाधना ने शीघ्र ही उन्हें वैराग्य और भक्ति के आँगन में ला खड़ा किया। कृष्ण-चिंतन ने आत्मदर्शन की जिज्ञासा का रूप ले लिया। विवेकानंद का उन्होंने लाहौर में दर्शन किया, उनके भाषण का रामतीर्थ के जीवन पर इतना प्रभाव पड़ा कि वे वेदांत और संन्यास में अधिकाधिक रूचि रखने लगे। उन्होंने जागतिक बंधन तोड़ दिये, पूर्ण रूप से आत्मा के आनंदमय सरस राज्य

में स्वतंत्र हो गये। सच्चिदानंद परमात्मा की स्वरूप निष्ठा ने उनके मन पर पूरा-पूरा आधिपत्य स्थापित कर लिया।

सनातन धर्म सभा के प्रसिद्ध उपदेशक दीनदयाल शर्मा के साथ उन्होंने वज्र प्रयाग और काशी की यात्रा भी की। उन्होंने हरिद्वार आदि स्थानों में पर्यटन किया और गंगोत्री की विकट यात्रा का भी संकल्प किया। काँटों और झाड़ियों से बिद्ध शरीर से खून भले ही निकले किन्तु पहाड़ पर चढ़ने का निश्चय छोड़ना तो असंभव ही था। उन्होंने एक स्थल पर गंगा को अपना शरीर अर्पण करना चाहा पर भगवती हिमकन्या ने उन्हें फूल की तरह एक चट्टान पर उछाल दिया। उनका ज्ञानचक्षु खुल गया। अद्वैतानुभूति की सिद्धि हो गयी। 'तत्त्वमसि' के पूर्ण प्रकाश ने उनका आलिंगन कर लिया। इस यात्रा से लौटने पर उनके सांसारिक बंधन और भी शिथिल हो गये। ओरियंटल कॉलेज में केवल दो घंटे पढ़ाने लगे। लाहौर से 'अलिफ' नाम का एक आध्यात्मिक विचारधारा का पत्र भी उन्होंने निकाला। धीरे-धीरे निवृत्ति के पथ पर अग्रसर होकर उन्होंने संन्यास ले लिया। हिमालय प्रदेश की फिर यात्रा की। अचानक मार्ग में ही धर्मपत्नी आदि का साथ छोड़कर टेहरी पड़ाव से नंगे-पैर, नंगे सिर चल पड़े। गंगा के पवित्र तट पर निर्जनता और नीरवता को साक्षी बना कर विधिपूर्वक यज्ञोपवीत उतार कर 28 साल की अवस्था में तीर्थराम से रामतीर्थ हो गए।

स्वामी रामतीर्थ ने विवेकानंद और दयानंद सरस्वती की तरह समग्र देश को आध्यात्मिक जागरण का संदेश दिया। देश और विदेश में भारतीय संस्कृति के धार्मिक और आध्यात्मिक स्वरूप का इतिहास समझाकर अपने जीवन का उद्देश्य सार्थक और सफल कर लिया। हिमालय के अंचल से मैदान में उतरकर उन्होंने मथुरा, फैज़ाबाद, लखनऊ आदि की यात्रा पर वेदांत पर महत्वपूर्ण भाषण दिया। उसके बाद टेहरी नरेश कीर्तिशाह की सहायता से वे विश्वधर्म-सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए जापान गए। पर किसी भी तरह का तत्संबंधी अयोजन न देखकर उन्होंने कहा-'वाह-वाह ! यह भी खूब रहा। राम तो स्वयं ही एक जीता-जागता विश्व धर्म सम्मेलन है। वह तो अपना सम्मेलन करेगा ही, चाहे टोकियो करे या न करे।' उसके बाद प्रशांत महासागर

को पार कर वे शीघ्र ही सेनफ्रांसिस्को में उतर पड़े। सेनफ्रांसिस्को में पहुँचने पर वे जहाज के डेक पर बार-बार आने-जाने लगे। यात्री अपने सामान लेकर उतर पड़े, पर राम निश्चिंत होकर आने-जाने में ही संलग्न थे। उनके दर्शन और स्पर्श में बड़ा आकर्षण था। जो देखता था, वही उनके वश में हो जाता था। उनकी मुस्कान और सौंदर्यगरिमा बड़ी मनमोहक थी। एक अमेरिकी ने रामतीर्थ से पूछा कि 'आपका सामान कहाँ है।' स्वामीजी ने कहा कि 'मेरे शरीर पर जो कुछ भी है, वही मेरा सामान है। मैं अपने पास रूपया-पैसा कुछ भी नहीं रखता। प्यास लगने पर कोई पानी पिला देता है तो भूख लगने पर कोई रोटी खिला देता है।' अमेरिकी उनकी बात से आश्चर्यचकित हो गया, पूछा कि 'क्या अमेरिका में भी ऐसा परिचित है ?' स्वामी राम ने शीतल मुसकान बिखेरते हुए तथा उनके कंधे को अपने कोमल हाथ से स्पर्श करते हुए कहा कि 'हाँ ! है, अवश्य है और वह परिचित तुम हो।' अमेरिकी उसी क्षण से उनका ही हो गया। उस अमेरिकी ने स्वामी रामतीर्थ के संबंध में एक स्थल पर उद्गार प्रकट किया कि 'स्वामी जी ! हिमालय की गुफाओं से उदय होने वाले सूर्य के समान ज्ञान पुंज हैं, न अग्नि उनको जला सकती है, न अस्त्र-शस्त्र काट सकते हैं। आनंद के अश्रु सदा उनके नेत्रों में झलकते रहते हैं। उनकी उपस्थिति मात्र से हमें नवजीवन मिलता है।' वे दो साल तक अमेरिका में रहे। जनता ने ईसामसीह की ही तरह उनकी पूजा की। समाचार पत्रों ने उनकी फोटो छाप कर बड़ा प्रचार किया कि अमेरिका में जीवित ईसा मसीह ही उतर पड़े हैं। अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति ने इस भारतीय संन्यासी के चरणों पर नत होकर अपना जीवन धन्य कर लिया। अनेक नास्तिक और जड़वादी लोग बात-की-बात में ही आस्तिक बन गये।

अमेरिका में स्वामी रामतीर्थ की निजी मंत्री मिस टायलर थी। स्वामी रामतीर्थ को न्यूयार्क जाना था। टायलर उन्हें 'ग्रेट पैसफिक रेल रोड' के व्यवस्थापक के पास ले गयी और न्यूयार्क के लिये रियायती टिकट देने की प्रार्थना की। व्यवस्थापक राम को देखते ही उनके रूप-लावण्य से आकृष्ट हो गया और कहा कि 'मैं स्वामी जी को 'पुलमैन 'कार यों ही दे देता हूँ। स्वामी जी की मुस्कान में जादू है।'

अमेरिका निवास काल में एक बार उनसे एक अभिनेत्री मिलने

आयी।उसने शरीर पर बहुत ही कीमती कपड़े पहने थे, इत्र की सुगंध चारों ओर फैल रही थी, वह देखने में बड़ी सुंदरी थी।उसने स्वामी राम से एकांत में मिलने की प्रार्थना की, स्वीकृति मिल गयी। उसने करूण स्वर से उनके पैरों पर गिर कर कहा कि,'महाराज ! मैं संसार के पाप ताप से जल रही हूँ, मुझे अपने हृदय से बड़ी घृणा है, मेरा उद्धार कीजिए।'स्वामी राम ने उसको सांत्वना दी।

अमेरिका में स्वामी जी का जीवन पूर्ण तपोमय था। जब वे शास्ता स्प्रिंगस में ठहरे हुए थे तब एक साधारण मज़दूर की तरह कड़ा-से-कड़ा श्रम करते थे। पर्वत पर से लकड़ी काट कर अपने आतिथेय के घर में एकत्र करते थे। स्वामी रामतीर्थ ने अमेरिका, जापान तथा मिस्र आदि देशों की जनता को सत्य, शांति और प्रेम का संदेश दिया, उन्हें आत्मचेतना प्रदान की। विदेश से भारत लौटकर उन्होंने स्वदेश भक्ति और सद्ज्ञान के आलोक में अपना संदेश भारतीयों को सुना कर विदेशी आधिपत्य और सरकार को चुनौती दी। उन्होंने अपनी अल्हड़ मस्ती में घूम-घूम कर वेदांत की सरस भाषा में कहा-'मैं ही भारत वर्ष हूँ, मैं ही भारत हूँ। यह भारत भूमि ही मेरा शरीर है। कुमारी अंतरीप मेरा चरण है। हिमालय मेरा मुकुट है। कटितट में कोपीन की तरह विंध्याचल की मेखला है। पूर्वी और पश्चिमी घाट मेरी दो भुजाएँ हैं। जब मैं चलता हूँ तो अनुभव करता हूँ कि सारा भारत ही चल रहा है। बोलता हूँ तो ऐसा लगता है कि सारा भारत ही बोल रहा है। मैं भारत हूँ, शिव हूँ ,शंकर हूँ। यही देशभक्ति की सबसे ऊँची भूमिका है। यही व्यवहारिक वेदांत है।' स्वामी रामतीर्थ का यह कथन अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।उन्होंने देश को प्रोत्साहन दिया कि भारतीय अपनी दिवंगत मातृ-पितृ आत्माओं को सुख पहुँचाने के लिए जिस प्रकार श्राद्ध करते हैं, उसी तरह भारत माता को स्वतंत्र करने के लिए हमें अपने स्वार्थों की बलि देनी चाहिए।

जीवन के अंतिम दिनों में वे सिमलस् में टेहरी नरेश के चंद्रभवन में रहते थे।वे नित्य गंगा-स्नान को जाया करते थे।संवत् 1963 वि. की दीपावली को उन्होंने गंगा को अपना शरीर सौंप दिया। बादशाहों के बादशाह रामतीर्थ आचार्य शंकर की ही तरह 33 साल की अवस्था में आत्म-लीन हो गये। वे महान् संत थे।

('जीवन दर्शन' सितंबर 2016 अंक से साभार)

स्वामी राम की वाणी

1. ज्यों ही हम संसार के सुधारक बनने के लिए खड़े होते हैं, त्यों ही हम संसार के बिगाड़ने वाले बन जाते हैं।

2. ऐसे विवाह-संबंध, जो केवल मुख के रंग-रूप, आकार-प्रकार अथवा शारीरिक सौंदर्य की आसक्ति से उत्पन्न होते हैं, अन्त में हानिकारक और बहुत ही निरानन्द सिद्ध होते हैं।

3. जब तक पति और पत्नियाँ एक-दूसरे के लिए परस्पर मुक्तिदाता बनना अंगीकार नहीं करते, तब तक संसार भर की धर्म पुस्तकें, कुछ लाभ नहीं कर सकती।

4. सच है, जब तक अपने-आपको स्वयं लेक्चर नहीं दोगे, दिल की तपन क्यों बुझने की है ?

अपना आवरण तू आप बना हुआ है, अतएव ऐ दिल ! अपने भीतर से तू आप जाग।

5. बात-बात में 'लोग क्या कहेंगे', 'हाय ! अमुक व्यक्ति क्या कहेगा'-इस भय से सूखते जाना, औरों की आँखों से हर बात का अंदाज़ा लगाना, केवल

जनता की सम्मति से सोचना, अपनी निजी आँख और निजी समझ को खोकर मूर्ख और पागल बनना अनुचित है।

6. तुम्हें कुछ आवश्यकता नहीं कि तुम अपने असली आसन को छोड़कर चपरासी और दास लोगों के काम को अपना धर्म मान बैठो।

7. जिस समय सब लोग तुम्हारी प्रशंसा करेंगे, वह समय तुम्हारे रोने का होगा क्योंकि इसी प्रकार झूठे पैगंबरों के पिताओं ने उनकी प्रशंसा की थी।

8. धन्य हैं वे लोग जो समाचार-पत्र नहीं पढ़ते, क्योंकि उनको प्रकृति के दर्शन होंगे और फिर प्रकृति के द्वारा पुरूष के दर्शन होंगे।

9. प्रार्थना करना कुछ शब्दों का दुहराना नहीं है। प्रार्थना का अर्थ है परमात्मा का मनन और अनभुव करना।

10. जहाँ कहीं रहो, दानी की हैसियत से काम करो; भिक्षुक की हैसियत कदापि ग्रहण मत करो, जिससे आपका काम विश्वव्यापी काम हो, उसमें व्यक्तित्व की गंध भी न रहे।

11. जो व्यक्ति कल्पनाओं में निवास करता है, वह भ्रम और आधि-व्याधि के संसार में निवास करता है।

12. अपने प्रति सच्चे बनिए और संसार की अन्य किसी बात की ओर ध्यान न दीजिए।

13. छिद्रान्वेषण की कैंची से जब कभी आपकी भेंट हो, तब आप झट अपने भीतर दृष्टि डाल कर देखें कि वहाँ कैसे-कैसे भाव उदय हो रहे हैं।

14. शरीर से ऊपर उठो। समझो और अनुभव करो कि मैं अनन्त हूँ, परम आत्मा हूँ और इसलिए मुझ पर मनोविकार और लोभ भला कैसे प्रभाव डाल सकते हैं।

15. हृदय की पवित्रता का अर्थ है, अपने आपको सांसारिक पदार्थों की आसक्तियों से मुक्त कर लेना। उन्हें त्याग देना। हाँ ! त्याग, त्याग इसके अतिरिक्त कुछ और नहीं-यही हृदय की पवित्रता का अर्थ है।

16. प्रेम का अर्थ है व्यवहार में अपने पड़ोसियों के साथ, उन लोगों के साथ जिनमें आप मिलते- जुलते हैं, एकता और अभदेता का अनुभव करना।

17. यदि अपने किसी मित्र के विषय में कोई अयोग्य बात मालूम हो, तो उसे भूल जाओ; यदि उसके संबंध में कोई अच्छी बात मालूम हो, तो उसे फौरन कह दो।

18. बिना काँटे गुलाब नहीं होता, वैसे ही इस संसार में विशुद्ध भलाई भी

अलभ्य है। जो पूर्ण रूप से शुभ है, वह तो केवल परमात्मा है।

19. परिस्थिति जितनी ही कठिन होती है, वातावरण जितना ही पीड़ाकर होता है, उन परिस्थितियों से निकलने वाले उतने ही बलिष्ठ होते हैं। अतः इन समस्त बाहरी कष्टों और चिंताओं का स्वागत करो।

20. तुम एक ही साथ इन्द्रियों के दास और विश्व के स्वामी नहीं बन सकते।

21. सभा-समाजों और समुदायों पर भरोसा मत करो। प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह स्वयं अपने भीतर से बलवान हो।

22. दूसरों की आँखों से अपने आपको देखने का स्वभाव मिथ्या अहंकार और आत्मश्लाघा कहलाता है।

23. सत्य किसी व्यक्ति विशेष की संपत्ति नहीं है; सत्य ईसा की जागीर नहीं है; हमें ईसा के नाम से सत्य का प्रचार नहीं करना चाहिए। सत्य कृष्ण अथवा किसी दूसरे व्यक्ति की संपत्ति नहीं है। वह तो प्रत्येक व्यक्ति की संपत्ति है।

सत्य तो वह है जो तीनों कालों में एक समान रहता है, जैसा कल था, वैसा ही आज है और वैसा ही सदा आगे रहेगा। किसी घटना-विशेष से उसका संबंध नहीं जोड़ा जा सकता।

24. यदि आप वेदांत का साक्षात्कार करना चाहते हैं तो इसकी अनुभूति उस समय करें, जब आपके चारों ओर रहट चलने का कोलाहल हो रहा हो।

निराशाजनक परिस्थितियों और अवस्थाओं के रहते हुए भी सभी महापुरूषों का आविर्भाव हुआ है। वास्तव में जितनी कठोर से कठोर परिस्थितियाँ ळोंगी, जितना कष्टप्रद से कष्टप्रद वातावरण होगा, उनसे लड़कर जो लोग सफलतापूर्वक निकलते हैं, वे उतने ही अधिक सुदृढ़ और बलशाली होते हैं। इसलिए इन बाह्य संकटों तथा कष्टों का स्वागत कीजिए।

25. बाह्य कार्यों से किसी का भी मूल्यांकन मत कीजिए, वस्तुतः मनुष्य वह नहीं होता है, जिसकी प्रतीति उसके कर्मों से होती है। मनुष्य तो अपने स्वयं के विचारों से जाना जाता है।

26. किसी मनुष्य का, उसकी संगति, उसके सहयोगियों के साहचर्य से मूल्यांकन मत कीजिए। किसी मनुष्य को उसके कृत्यों से भी नहीं आँकिए। किसी के बारे में कोई निर्णय मत निर्धारित कीजिए। जिस प्रकार के विचार किसी मानव के होते हैं, उसी प्रकार का वह मानव होता है।

27. यदि इस संसार में तीन सौ तैतीस करोड़ ईसा एक साथ पृथ्वी पर प्रकट हो जाएँ और आपका भला करना चाहें, तो भी कुछ नहीं कर पाएँगे। जब तक आप स्वयं अपने भीतर से अंधकार दूर करने के लिए संकल्प नहीं लेते और प्रयास नहीं करते तब तक अज्ञान का भयावह अंधकार जाने का नहीं है।

28. प्रतीतमान परिस्थितियों पर आश्रित रहने और सांसारिक बुद्धिमत्ता का हमारे विजय अभियान में किंचित भी स्थान नहीं है। हमारे सभी संबंध, मित्रता, धन-वैभव, आशाएँ, संपदाएँ तथा वचन, या यों कहें हमारा संसार

वास्तव में केवल एक भ्रम है, धोखा है, और दर्पों का दर्प है, अहंकारों का अहंकार है।

29. यदि हम अपनी निंदा-स्तुति में विश्वास न करने की विधा का विकास करें जो हम पर थोपी जाती है, यदि हम कार्य के अहंकार के बुखार से अपने को मुक्त रखें, यदि हम अपनी ऊर्जा और शक्ति का, सत्य का प्रतिपादन करने की बजाय, मूर्तिमान सत्य बनने में व्यय करें और यदि हम अपने कार्यों के लिए उतना न्यूनातिन्यून श्रेय लें जितना सूर्य सदैव सर्वथा प्रकाश फैलाने में लेता है तो निस्संदेह हम महेश्वरों के महेश्वर बन सकते हैं।

30. जिस प्रकार हम अपने हाथों से दस्ताने उतारते हैं, उसी प्रकार आपको अपनी वर्षों पुरानी योजनाओं और उद्देश्यों से विरत होना होगा, यश और नाम की लालसा सदा के लिए छोड़ देनी होगी, परिचितों की वाणी को भूल जाना होगा, आपको अपने चारों ओर फैली प्रेम-सिंचित भुजाओं के आलिंगन को विस्मृत करना होगा तथा रोग के भय को दूर फेंक देना होगा और प्रशंसा-अर्जन की आशाओं को नष्ट करना होगा-तभी आप अपने आपको शारीरिक बंधनों से उन्मुक्त कर सकेंगे।

31. अपनी वर्तमान परिस्थितियों में आपके पास आध्यात्मिक उन्नति के लिए पर्याप्त समय है। यदि आप अपने समय का सदुपयोग करें तो आपको इस प्रयोजन के लिए समय की कभी भी कोई कमी नहीं हो सकती है।

32. इस भरे-पूरे संसार में बहुत कम व्यक्ति ही वास्तविक रूप से जीवित रहते

हैं। आप तो अपने द्वारा रचित लघु संसारों में रहते हैं। आप लोगों ने अपने क्षुद्र अहंकार के चारों ओर छोटे-छोटे अनेकानेक संसारों की रचना कर रखी है। यदि आप इससे ऊपर उठ सकें तो निस्संदेह संपूर्ण विश्व आपके सम्मुख नतमस्तक होगा।

33. 'सर्व' अथवा 'ईश्वर' के साथ आपका तादात्म्य स्थापित हो जाने के फलस्वरूप ही आपको सफलता प्राप्त होती है। सफलता सदैव आपकी अच्छाई का परिणाम है। सफलता आपको परमात्मा में लीन और समाहित होने के कारण मिलती है।

34. हमारे दुःख का मूल कारण यह है कि हम दूसरों के नेत्रों के माध्यम से अपने को देखते हैं और अपने समीप के लोगों की दृष्टि से अपना मूल्यांकन करते हैं, इसके विपरीत हम अपनी वास्तविक आत्मा, अपने स्वयं के दर्शन करने की चेष्टा ही नहीं करते हैं। दूसरों के नेत्रों द्वारा स्वयं को देखने की आदत को मिथ्याभिमान और आत्मश्लाघा कहते हैं। हम दूसरों की निगाहों में अपने को अच्छे से अच्छा दिखलाना पसंद करते हैं। यह प्रवृत्ति समाज का अभिशाप है, सभी धर्मों का विष है।

35. आप स्वयं अपने पैरों पर खड़े हो। आप इसकी चिंता बिल्कुल न करें कि आप छोटे हैं या बड़े, ऊँचे पद पर हैं या नीचे पद पर। आप कभी भी अपने आपको दीन-हीन, निकृष्ट, पराभूत या जीर्ण-शीर्ण मत समझें। अपने देवत्व, अपने ईश्वरत्व की अनुभूति कीजिए।

36. जब हम सबमें और प्रत्येक में ईश्वरत्व की अनुभूति नहीं करते हैं तो हम ईश हत्या या दिव्यात्मा की हत्या का अपराध कर बैठते हैं। ईश्वर की, दिव्यात्मा की
हत्या करना अज्ञान है, और यही अज्ञान इस संसार में सभी दुःख- दारूण्य का आदि कारण है।

37. जब शरीर, नाम-रूप या बाह्य भ्रामक स्वरूप इतनी प्रमुखता प्राप्त कर ले कि अन्तःस्थल का ईश्वर ही विस्मृत हो जाए, तो आप पतित बन जाते हैं।

38. मनुष्य के भीतर संचित अंधकार को उसके अंदर से दूर करने में कोई समय नहीं लगता है, बस केवल आवश्यकता है-वास्तविक सत्य, दिव्यात्मा के प्रकाश को उसके हृदय के गुह्यतम स्थली में प्रस्फुटित करने की।

39. जब ब्रह्माण्ड के साथ हमारी साम्यावस्था होती है तब सभी सुख हमारे होते हैं और इन सुखों को हमारा होना ही पड़ता है। यही विधान है। दुःख-कष्ट की अनुभूति हमें बताती है कि जब कभी भी हम भौतिक, भ्रामक, मायावी पदार्थों से अनुरक्त हुए या उनसे चिपके तो उसके बाद ही हमेशा दुःख-कष्टों को झेलना होता है।

40. यदि इस संसार में कोई भी व्यक्ति किसी भी सांसारिक पदार्थ से या किसी व्यक्ति से अनुरक्त होगा, आसक्त होगा तो निस्संदेह उसे दुःखी होना पड़ेगा-या तो उस अनुराग, आसक्ति का मित्र या पदार्थ उससे छीन लिया जाएगा या उनमें से एक की मृत्यु हो जाएगी या फिर उनमें कलह-विग्रह हो जाएगा। यह एक अकाट्य विधान है।

41. यदि पत्नी अपने पति को दास बनाने की इच्छा न करे और पति भी अपनी पत्नि को अपने ऊपर आश्रित बनाने की बिल्कुल चेष्टा न करे, तो पति और पत्नी एक दूसरे के उद्धारक बन सकते हैं। आप सभी को, अपने आप से, अपनी ओर से, स्वतंत्र कर दीजिए और फिर आप स्वयं स्वतंत्र है।

42. वेदांत आपसे यह अनुरोध कदापि नहीं करता है कि आप अपनी पत्नी या अपने पति अथवा अन्य संबंधियों को छोड़ दें। वेदांत कहता है-'पत्नी को इसलिए छोड़ दीजिए क्योंकि पत्नी के रूप में वह आपसे संबंधित है।' पत्नी का पत्नी के रूप में परित्याग कर दीजिए। लेकिन उसके अन्तस्थ में, उसके भीतर वास्तविक आत्मा, वास्तविक दिव्यता का साक्षात्कार कीजिए। शत्रु का शत्रु के रूप में परित्याग कर दीजिए, शत्रु में केवल ईश्वर का ही दिग्दर्शन कीजिए। इसी प्रकार मित्र का मित्र के रूप में त्याग कर दीजिए, परंतु उस मित्र में ईश्वरत्व, देवत्व का साक्षात्कार कीजिए।

43. जिस व्यक्ति ने कभी भी प्रेम नहीं किया है, वह कभी भी ईश्वर का साक्षात्कार नहीं कर सकता है।

44. दिखावटी प्रेम, झूठी भावनाएँ और कृत्रिम भावुकता ये सब ईश्वर के प्रति अपमान है।

45. वासनाओं, इच्छाओं का दुरूपयोग करना और उनको दोष देना, अस्वाभाविक है। आप इन वासनाओं को कुचल नहीं सकते हैं, बल्कि इनसे ऊपर उठ सकते हैं और उनको समाप्त कर सकते हैं। प्रिय आत्मन् ! वासनाओं

को साधन बनाइए, उनका सदुपयोग कीजिए और फिर उनसे ऊपर उठ जाइए।

46.आधि-व्याधि क्या है ?प्रेम के अभाव में संकुचन या संकीर्ण वृत्ति;केवल परछाई के हिलने-डुलने से पर फड़फड़ाना और दिन के झूठे स्वप्नों के भय से चिल्लाना।

47. विश्व तो स्वयं ही एक अद्‌भुत चमत्कार है। फिर दूसरे चमत्कारों की क्या आवश्यकता है ? भय ही सब पापों की जड़ है और इस भय का निर्मूल नाश केवल आत्मज्ञान से ही होता है। विशुद्धता का साक्षात्कार कीजिए और स्वयं मूर्तिमान विशुद्ध बन जाइए। किसी अन्य धर्म की शिक्षा देना अस्वाभाविक है।

अपनी बादशाही

जो तू है, सो मैं हूँ, जो मैं हूँ, सो तू है।
न कुछ आरज़ू है न कुछ जुस्तजू है।।1।।

बसा राम मुझमें, मैं अब राम में हूँ।
न इक है, न दो हैं, सदा तू ही तू है।।2।।

उठा जब कि माया का परदा यह सारा।
किया गम खुशी ने भी मुझ से किनारा।।3।।

जुबां को न ताकत न मन को रसाई।
मिली मुझको अब अपनी ही बादशाही।।4।।

-स्वामी राम

एक संबुद्ध चेतना-स्वामी रामतीर्थ

- साध्वी देशनाश्री

आभारी हूँ चरम-मंगल पत्रिका की.....आत्मज्ञानी सद्‌गुरूदेव पूज्य श्री विराट गुरूजी द्वारा स्थापित चरम-मंगल पत्रिका का दसवाँ व ग्यारहवाँ वर्ष..... प्रत्येक अंक किसी न किसी संबुद्ध महापुरूष.....उनके दर्शन.....उनकी वाणी को समर्पित है। पत्रिका के समस्त पाठकों को.....स्वयं मुझे भी इस निमित्त अनेकों महापुरूषों की वाणी को पढ़ने और समझने का अवसर मिला। इसी सिलसिले में इस वर्ष का यह तीसरा अंक , वेदांत से एकात्म हो चुके स्वामी रामतीर्थ को समर्पित है। स्वामी राम स्वयं को 'बादशाह राम' कहते थे, क्योंकि वे 'तत्वमसि', 'अहं ब्रह्मास्मि' के सत्य का साक्षात् कर चुके थे। उनका वह उद्‌घोष कितना अकाट्य है कि ....' भले ही सूर्य पारे का गोल मंडल दिखाई पड़े, चाहे पृथ्वी को नतोदर, खोखला वृत्त सिद्ध कर दिया जाए, चाहे वेदों के बारे में यह प्रतिपादित कर दिया जाए कि वे 'देव-वाणी' नहीं है, पर यह कभी भी, कदापि भी असत्य नहीं होगा, सदैव सत्य रहेगा कि आप ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं, आप ईश्वर ही ईश्वर हैं।'

स्वामी राम का कहना था कि आप अपनी दिव्यता में, अपने ईश्वरत्व में अपना दृढ़ विश्वास, निश्चल आस्था उत्पन्न करें।

'आप स्वयं ही ईश्वर हैं', 'आत्मा ही परमात्मा है', 'सोऽहम्', तथा 'अप्पा सो परमप्पा'.....ये ही तो समण दर्शन की भी उद्‌घोषणाएँ रही है। समण दर्शन की दोनों प्रमुख धाराएँ-जैन एवं बौद्ध दर्शन-हमें अपने आत्यंतिक (The Ultimate) स्वरूप 'ईश्वरत्व' को जानने व उसी में प्रतिष्ठित होने का ही तो मार्ग दिखाती है। चाहे वेदांत का 'तत्वमसि' या 'अहं ब्रह्मास्मि' हो,

समण दर्शन का 'सोहऽम्' हो, शैवों का 'शिवोऽहम्', सूफी का 'अनलहक' हो, श्रीकृष्ण का 'मैं ही वह ईश्वर हूँ' हो, सद्गुरूदेव श्री विराट गुरूजी का 'मैं सत्य सनातन आत्मा हूँ' हो, अथवा किसी भी महापुरूष की ऐसी ही कोई अभिव्यक्ति हो-शब्दों के भेद के अतिरिक्त सभी सत्यदृष्टा महर्षियों की अनुभूति सर्वथा समान थी। सभी ने स्वयं के भीतर ही परमात्मा को, ईश्वर को, शुद्ध स्वरूप को, सच्चिदानंद रूप को अनुभवा, और हम सभी को भी अपने क्षुद्र अहंकार को त्यागकर हमारी वास्तविक दिव्य भव्यात्मा में प्रतिष्ठित होने की प्रेरणा दी।

वास्तव में, समस्त संसार के सभी सत्यदृष्टा अनुभवज्ञानियों का उस परम तत्व का वेदन (अनुभव, दर्शन) एक-सा है। ये तो हमीं क्षुद्र मति वाले अज्ञजनों का अज्ञान है, जो सभी पंथों-संप्रदायों या महापुरूषों में भेद देखता है। अन्यथा सत्य एक ही है। दर्शन अभंग ही है। हाँ, अभिव्यक्तियाँ अनेकरूपा हो सकती है। 'एक सद्विप्रा बहुधा वदंति'। इन्हीं नाना प्रकारा अभिव्यक्तियों के फेर में पड़कर मंदमति लोग भ्रमित होते रहते हैं। किंतु हकीकत में, रहस्य को उपलब्ध सभी महापुरूषों की देशना एक ही है। 'उस' एक को ही इंगित करती है। जीवन के शाश्वत विधान का ही बोध कराती है। इसीलिए, स्वामी रामतीर्थ ग्रंथावली के 'आत्मानुभव' को पढ़ते हुए मुझे लगता रहा जैसे मम ज्ञान चक्षु प्रदाता सद्गुरूदेव श्री विराट गुरूजी की वाणी का ही मैं पुनः अवगाहन कर रही हूँ। चाहे कबीर हो, रामकृष्ण परमहंस हो, योगीराज शांतिसूरीश्वर जी गुरूदेव हो, स्वामी रामतीर्थ हो, श्री शरणानंद जी महाराज हो, श्रीमद् राजचंद्र हो, दादा-भगवान हो, कृष्ण, बुद्ध, यीशु, मोहम्मद, सुकरात या लाओत्से हो-ज्ञानियों की वाणी का हार्द एक ही है।

स्वामी राम ने एक स्थान पर कहा ''जब आप लेखन कार्य कर रहे हो तो उसकी सफलता आपके निस्पृह भाव से, अकर्त्ता-भाव से लेखन करने पर निर्भर होती है। उस समय आपका अहंकार, आपकी क्षुद्रात्मा, मिथ्याभिमान बिल्कुल ही नहीं रहता है। आपका काम, आपका लेखन स्वतः ही, यांत्रिक रूप से, अपने आप सम्पन्न होता रहता है। यह एक प्रकार का परावर्तित कार्य है और आपका हाथ स्वयमेव ही लेखन-कार्य में तल्लीन हो जाता है, काम होता रहता है। ऐसा क्यों होता है ? क्योंकि आप इस कार्य में अपनी क्षुद्रात्मा को,

अपने स्वार्थी अहंकार को हस्तक्षेप नहीं करने देते हैं। जिस क्षण आपके अपने मन में यह विचार उत्पन्न होना प्रारम्भ हुआ कि 'देखो, मैं कितनी महान कृति लिख रहा हूँ, मेरा लेखन कितना अद्भुत हो रहा है', बस तत्क्षण आप चूक कर बैठते हैं और आपकी लेखनी भी भूल करने लगती है।''

इस प्रकार हम देखते हैं कि कार्य तभी सम्पन्न होता है, जब हम अपने क्षुद्र स्वार्थ-परक अहंकार से विरत हो जाते हैं। जिस क्षण आप क्षुद्र अहंकार के भँवर जाल में फँसे, फिर तो आपका कार्य ही बिगड़ गया। सर्वोत्कृष्ट कार्य वही होता है जो अकर्ता भाव से, निरासक्त भाव से किया जाता है। त्याग का तात्पर्य इस क्षुद्र, व्यक्तिगत, स्वार्थपरक अहंकार से छुटकारा पाना है, जीव-भाव के मिथ्याभिमान से विरत होना है। सूर्य प्रकाशित होता है। सूर्य को यह भान नहीं है कि वह कार्य कर रहा है। सूर्य अत्यन्त मोहक, चित्ताकर्षक है, क्योंकि वह व्यक्तिगत भाव से शून्य रहता है, निर्लिप्त, निस्पृह है। नदी प्रवाहित होती है। उसके प्रवाह में व्यक्तिगत क्षुद्र अहंकार किंचित मात्र भी नहीं रहता, लेकिन वह अपना काम निरन्तर करती रहती है। दीपक जलता है, लेकिन उसमें यह व्यक्तिगत अहंकार नहीं रहता कि ''मैं महान हूँ, मैं प्रज्ज्वलित हो रहा हूँ, मैं प्रकाश फैला रहा हूँ।'' दीपक इस अहंकार से नहीं जलता। फूल खिलते हैं और अपनी सुगन्धि चारों ओर फैलाते रहते हैं। परन्तु उनमें यह भाव नहीं होता है कि वे अत्यन्त मधुर हैं और वे अत्यन्त प्रिय हैं।

इसी प्रकार आप अपना कार्य भी अकर्त्ता भाव से होने दें। आप अपने कार्य को स्वार्थ-परक अहंकार के किंचित प्रदूषण से उन्मुक्त रखें। आप अपने कार्य को ठीक उसी प्रकार होने दें जिस प्रकार तारे और सूर्य करते हैं, आप अपने कार्य को चन्द्रमा की भांति संचालित होने दें। केवल तभी आपका कार्य सफल होगा। यह वही बात है, जो हमने सद्गुरूदेव श्री विराट गुरूजी में देखी। हमें बड़ा ही अद्भुत लगता था कि गुरूदेव से किस प्रकार स्वतः काव्य अथवा लेख या कोई भी रचना उद्भूत होती थी। वे किसी कविता, गीत या लेख को जोड़-जोड़कर या सोचकर नहीं बनाते थे। उनके भीतर से सहज ही काव्य फूटता था। कृति स्वयमेव सृजित होती थी। वे स्वयं तो अकर्त्ता, मात्र ज्ञाता दृष्टा होते थे। उनका प्रत्येक कार्य इसी प्रकार संपन्न होता था। वे कार्य करते नहीं थे। उनका कहना था कि 'कुछ करो मत, बस कर्त्तव्य को निष्काम भाव से

जीओ....। कार्य स्वतः हो, तुम उस क्रिया के साक्षी रहो, दृष्टा रहो'-यही तटस्थता है, निष्पक्षता है, सम्यक्त्व है। उनकी श्री वाणी से उच्चरित एक काव्यांश है-

'कर्म बने कर्त्तव्य साधना, नहीं श्याम ना ही कुछ सित।
वह पुरूषार्थ विशुद्ध पुनीत, वह पुरूषार्थ विशुद्ध पुनीत।।'

यही तो संपूर्ण गीता का सार है, कि कर्म करो पर फल की चिंता मत करो। फल तो नियम से आता ही है। परंतु यदि फल की आशा नहीं है और कार्य में ही आनंद है, तो कर्म पूर्णता से होता है। ऐसा निष्काम कर्म ही सदा स-फल होता है। 'ताओ' को उपलब्ध महान् गुरू लाओत्से का कहना था-'आप कुछ भी करने का प्रयत्न न करें, फिर सब चीज़ें अपनी जगह पर ठीक-ठाक जम जाएगी।'

स्वामी राम ने कहा-'शाश्वत विधान यही है कि मनुष्य को विश्राम की अवस्था में, शांति की दशा में और अविचलित स्थिति में रहना चाहिए परंतु उसका शरीर सदैव गति में रहना चाहिए। उसका चित्त 'स्थिति विज्ञान' के नियमों का अनुपालन करता रहे और उसका शरीर 'गति विज्ञान' के नियमों का। शरीर को कार्य में संलग्न और आंतरिक आत्मा को सदैव विश्राम की स्थिति में स्थित होना चाहिए। यही विधान है।' बल्ब का आविष्कार करने वाले थॉमस एल्वा एडिसन ने इसी बात को इस प्रकार कहा-'आराम ही सारे आविष्कार की जननी है।' पूज्य श्री विराट गुरूजी की वाणी हमें Art of Rest अर्थात् विश्राम में रहकर किसी भी कार्य को करने की कला सिखाती रही।

विराट ज्ञान का यह अद्‌भुत सूत्र Art of Rest; लाओत्से का प्यारा सूत्र-'आप कुछ भी न करने का प्रयत्न करें, सब कुछ अपने आप ठीक हो जाएगा'; स्वामी राम का कथन 'कार्य के अहंकार के बुखार से अपने को मुक्त रखें' और महायोगी श्रीकृष्ण का प्रसिद्ध वक्तव्य 'कर्म करते रहो परंतु फल की आकांक्षा मत करो'-यदि हमें समझ में आ जाए और हमारे चरित्र में ढल जाए, तो हमारे जीवन से सारी चिंताएँ, सारा तनाव यूं गायब हो जाए जैसे दिन में तारे। कामनारहित कर्त्तव्य कर्म सतत् होता रहे, तो निश्चय ही हम अपने प्रारब्ध से मुक्त हो जाएँ.....कर्मों के कर्ज से ऋणमुक्त होकर सनातन आनंद में अवस्थित हो जाएँ। ऐसा ही हो....यही मंगल मनीषा.....। जय हो !!

व्यवहारिक अमली वेदांत

स्वामी रामतीर्थ

यूँ तो वेदांत की शिक्षाएँ बहुत है, शास्त्रों की लंबी-चौड़ी टीकाएँ भी है; किन्तु जिन्हें संक्षिप्त में प्रयोग में लाने वाला वेदांत चाहिए, वे स्वामी राम के द्वारा दिए गए निम्न सूत्रों को अमल में लावें।

व्यवहारिक अथवा अमली वेदान्त-

1. साहसपूर्ण आगे बढ़ने वाला परिश्रम न कि जकड़ देने वाला आलस्य।
2. काम में आराम, न कि थकानेवाली बेगार वृत्ति।
3. चित्त की शांति, न कि संशय रूपी धुन।
4. संघटन, न कि विघटन।
5. समुचित सुधार, न कि लकीर के फकीर।
6. गंभीर और सत्य भावना, न कि लच्छेदार बातें।
7. तथ्य और सत्यभरी कविता, न कि कपोल-कल्पित कहानियाँ।
8. घटनाओं के आधार पर तर्क, न कि केवल प्राचीन लेखकों के प्रमाण।
9. जीता-जागता अनुभव, न कि जीवनशून्य वचन।

यही सब मिलकर व्यवहारिक वेदांत बनता है। व्यवहारिक वेदांत पढ़ने या रटने की विषयवस्तु नहीं है। यह श्रावक के 12 व्रतों की तरह जीवन जीने की सम्यक् शैली है, जिसे जी कर ही अनुभव किया जा सकता है। वेदांत कहो या उत्कृष्ट ज्ञान कहो-मात्र जगाने का माध्यम है। जागना तो स्वयं को ही है।

जय हो !

सच्चा त्याग क्या है ?

स्वामी रामतीर्थ

त्याग आपको सर्वोत्तम स्थिति में रखता है; आपको उत्कर्ष की स्थिति में पहुँचा देता है।

त्याग निश्चय ही आपके बल को बढ़ा देता है; आपकी शक्तियों को कई गुना कर देता है; आपके पराक्रम को दृढ़ कर देता है; नहीं-आपको ईश्वर बना देता है। वह आपकी चिन्ताएँ और भय हर लेता है। आप निर्भय तथा आनन्दमय हो जाते हैं।

स्वार्थपूर्ण और व्यक्तिगत सम्बन्धों को त्याग दो, प्रत्येक में और सबमें ईश्वरत्व को देखो; प्रत्येक में और सब में ईश्वर के दर्शन करो।

त्याग क्या है ? अहंकारयुक्त जीवन को त्याग देना। निःसंशय और निःसंदेह अमर जीवन व्यक्तिगत और परिच्छिन्न[1] जीवन को खो डालने से मिलता है।

वेदान्तिक त्याग कैसे हो ? आपको सदा त्याग की चट्टान पर ही खड़ा होना पड़ेगा; अपने-आपको इस उत्कर्ष दशा में दृढ़तापूर्वक जमा कर, जो काम सामने आए, उसके प्रति अपने आपको पूर्णतः अर्पण करना होगा। तब आप थकेंगे नहीं; फिर कोई भी कर्त्तव्य हो, आप उसे पूरा कर सकेंगे।

त्याग का आरम्भ सबसे निकट और सबसे प्रिय वस्तुओं से करना चाहिए। जिनका त्याग करना परमावश्यक है, वह है मिथ्या अहंकार अर्थात् मैं यह कर रहा हूँ, मैं कर्त्ता हूँ, मैं भोक्ता हूँ, यही भाव इसमें मिथ्या व्यक्तित्व को उत्पन्न करते हैं। इनको त्याग देना होगा।

त्याग आपको हिमालय के घने जंगल में जाने का आदेश नहीं देता;

1 परिच्छिन्न-स्वार्थपूर्ण

त्याग आपसे कपड़े उतार डालने का आग्रह नहीं करता; त्याग आपको नंगे पाँव और नंगे सिर घूमने के लिए नहीं कहता।

त्याग न तो अकर्मण्य, आचारी और नैराश्यपूर्ण निर्बलता है और न दर्पपूर्ण तपश्चर्या ही। ईश्वर के पवित्र मन्दिर अर्थात् अपने शरीर को बिना प्रतिरोध मांसाहारी निर्दयी भेड़ियों को खाने देना कोई त्याग नहीं है।

त्याग के अतिरिक्त और कहीं वास्तविक आनंद नहीं मिल सकता; त्याग के बिना न ईश्वर-प्रेरणा हो सकती है, न प्रार्थना।

ईश्वरत्व और त्याग पर्यायवाची शब्द है। संस्कृति और सदाचार उसकी बाह्य अभिव्यक्तियाँ है।

अहंकारपूर्ण जीवन को छोड़ देना ही त्याग है और वही सौन्दर्य है।

हृदय की शुद्धता का अर्थ है अपने-आपको सांसारिक पदार्थों की आसक्ति से अलग, पृथक् रखना। त्याग का अर्थ इससे रंचमात्र कम नहीं।

यह शरीर मेरा है-इस अधिकार भाव को छोड़ दो, सारे स्वार्थपूर्ण संबंधों को, 'मेरे' और 'तेरे' के भावों को छोड़ दो। इनसे ऊपर उठो।

त्याग के भाव को ग्रहण करो और जो कुछ प्राप्त हो, उसे दूसरों पर प्रकाशित करो। स्वार्थपूर्ण शोषण मत करो। ऐसा करने से आप अवश्य ही श्वेत, उज्ज्वल हो जाएँगे। कामना से रहित कर्म ही सर्वोत्तम त्याग अथवा पूजन हैं।

('हमें जानना चाहिए' शेषांश पृष्ठ 15 का)

तक पहुँचा नहीं पाता, इसलिए वह सुन नहीं सकता।

आज के शरीर-शस्त्रियों ने भी यह माना है कि सुनने की क्षमता जितनी दाँतों की हड्डियों में है, उतनी कान में नहीं है। कान की अपेक्षा दाँत अच्छा सुन सकते हैं। आज तो यह भी प्रयत्न हो रहा है कि विश्व में कोई बहरा न रहे। दाँत की हड्डियों पर एक यंत्र फिट कर दिया जाएगा और बहरा आदमी सुनने लग जाएगा। जीभ सुन सकती है, दाँत सुन सकते हैं, यह बहुत निकट की बात है।

हमारे पास जो है, वह दिखाई नहीं देता

-श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, कुरूक्षेत्र

एक बार की बात है स्वामी रामतीर्थ अमरिका में थे। एक कार्यक्रम के पश्चात् कुछ लोगों ने गालियाँ दी तो वे हँसते हुए घर लौटे । जब उनके मित्रों को पता चला, कि उनको गालियाँ दी गई तो वे बहुत नाराज़ हुए। रामतीर्थ को हँसते हुए देख कर उन्होंने पूछा कि 'आप पागल तो नहीं, आप हँस रहे हैं? आपको गालियाँ दी गई है, आपका अपमान किया गया है ?' रामतीर्थ ने कहा 'मुझे कोई गाली देता तो मैं कोई जवाब देता। वे लोग राम को गाली दे रहे थे। राम से अपना क्या लेना-देना है ? इस नाम के बिना भी मैं हो सकता था। दूसरे नाम का भी हो सकता था। तीसरे नाम से भी हो सकता था। कोई ए.बी.सी.डी. को गाली देते, इससे लेना-देना क्या? जब वे राम को गाली दे रहे थे, तब हम भी भीतर बड़े खुश हो रहे थे, कि देखो राम ! कैसी गालियाँ पड़ रही हैं, आया मज़ा? बनोगे राम तो गाली पड़ेगी। उन्होंने नाम दिया, उन्होंने गाली दी। हम बाहर हैं। नाम भी उनका, गाली भी उनकी, वे खुद ही खेल रहे थे। कुछ लोगों का खेल होता है, कुछ लोग ताश के पत्ते अकेले खेलते हैं, दोनों तरफ से चाल चलते हैं। होना चाहिए उन्हें पागलखाने में, लेकिन होते बहुत बुद्धिमान लोग हैं, समाज दोहरी चाल चलता है-नाम भी देता है, गाली भी देता है, प्रशंसा भी देता है, निंदा भी देता है, आदर भी देता है, अपमान भी देता है। दोहरी चाल है समाज की और उस दोहरी चाल में आदमी बुरी तरह फँसता है। वह दूसरा भी झूठा है और यह मैं? यह मेरा 'मैं' भी झूठ है, यह दो झूठ एक साथ ज़िंदा रहते हैं। जिस दिन दूसरा गिरता है, उसी दिन 'मैं' गिर जाता है। इधर मैं गिरता है, उधर दूसरा गिर जाता है।' राम की तरह हम सबके भीतर भी यह समत्व दृष्टि जागे तो सबका कल्याण निश्चित है।

राम की खुमारी

-साध्वी चरमश्री 'मौनीमाता'

स्वामी रामतीर्थ कैसे थे? उनके भीतर अनहद की लगन कितनी तीव्र थी? वे देह में रहते हुए भी देहातीत होने को कितने व्याकुल थे? उनका चित्त सदा आत्मध्यान में लगा रहता। उनके भीतर समय-समय पर अद्भुत घटनाएँ घटती रही और उनकी काव्यात्मक प्रतिभा उन घटनाओं को बयाँ भी करती रही। किसी कवि की कविता ही उसकी पहचान होती है। कवि कविता में अपने हृदय को उंडेलता है। वह भीतर की संवेदनाओं को शब्दों में ढालने का भरसक प्रयास करता है किंतु फिर भी वह जानता है कि जो कुछ कहा जाता है.... लिखा या गाया जाता है, वह सबकुछ मेरे भावों को व्यक्त करने में असमर्थ है। जो मैं महसूस कर सकता हूँ, उसे गा नहीं सकता, उसे शब्दों में बाँध नहीं सकता। आओ, हम भी स्वामी रामतीर्थ को उनकी कविताओं के माध्यम से जानने का, महसूस करने का क्षणिक प्रयास कर लें-

परमात्मा की प्रीति में डूबा चित्त इस जगत से निर्लिप्त होता चला जाता है, वह अनासक्ति को साधता नहीं है। अनासक्ति स्वयमेव घटित होती है क्योंकि अब मन की डोर प्रभु प्रियतम से जो बंध चुकी होती है। वे कहतेहैं कि -

इश्क का मनसब लिखा जिस दिन मेरी तक़दीर में।
आह की नकदी मिली, सहरा मिला जागीर में।।

जिस दिन से मेरी तक़दीर में उस प्यारे प्रियतम परमात्मा का इश्क लिखा गया, उस दिन से मुझे विरासत में सहरा यानि मरूस्थल और तन्हाई मिली तथा आहें भरने की रकम मिली।

क्या ही अद्‌भुत आख्यान है यह ....कि जिस दिन से उसकी निगाहों में आया हूँ, उनकी नज़रे-करम हुई है, उसके लिए दिल में इश्क जगा है, तब से ही दिन-रात बस आहें भरता रहता हूँ। उसके दीदार-ए-इश्क में खोया पड़ा रहता हूँ। अब ये निगाहें बाहर कहीं कुछ ना देखती है, ना खोजती है। मेरे लिए सारा संसार एक मरूस्थल हो गया है, जहाँ दूर-दूर तक रेती के सिवाय कुछ नज़र ही नहीं आता। यहाँ मैं सबको देखता हुआ भी नहीं देखता, अब तो इन निगाहों में बस वो ही वो समा गया है। मैं सबके बीच भी खुद को ऐसा पाता हूँ, जैसे सहरा में भटका कोई इंसान। ये सब मेरे नहीं है। जो मुझे समझ सके, वो तो केवल तू ही तू है। बस तू पूरा रूबरू हो....यही इक धुन लगी है....।

फिर जब किसी दिन वे मस्ती में डूबे प्रियतम के रंग में रंगे , उसकी प्रीत में आशिक हुए तो मदमस्त हो कह उठे कि-

न है कुछ तमन्ना न कुछ जुस्तजू है।
कि वहदत में साकी न सागर न बू है।।
मिली दिल को आँखे जभी मारफत की।
जिधर देखता हूँ सनम रू-ब-रू है।।

गुलिस्ताँ में जाकर हर इक गुल को देखा।
तो मेरी ही रंगत व मेरी ही बू है।।
मिरा तेरा उट्ठा हुए एक ही हम।
रही कुछ न हसरत न कुछ आरजू है।।

किसी दिन वे अपने भीतर सहरा (रेगिस्तान) महसूस कर रहे थे, तो किसी दिन गुलिस्ताँ को। आज वे कह रहे हैं कि जिस दिन से उससे आँखें चार हुई है, हर तमन्ना जाती रही है। अब कोई जुस्तजू बाकी ना रही। ना कुछ जानने की इच्छा, ना ही कुछ पाने की लालसा। अब तो मेरे भीतर किसी अन्य की अपेक्षा रही ही नहीं। अब तो मैं पूरे संसार में घूम-घूम कर जिधर भी देखता हूँ तो सब में खुद को ही पाता हूँ। मेरा-तेरा का भेद गिर गया, 'हम' हो गए। सब

एकात्म हो गए, न कोई हसरत रही, न ही आरजू।

न कोई शंका बची, न ही कांक्षा, उसके सामने कोई 'पर' रहा ही नहीं। किसी अन्य दिन उन्हें प्रेम की खुमारी ऐसी चढ़ी कि वे कहने लगे कि

'दिल को प्यारे को अर्पण करने से
न लिखने की फुरसत रही और न ही किसी कामकाज की।
आप तो वह बेकार (अकर्ता) था ही,
अब हमको भी वैसा ही बेकार कर दिया।

यानि उस अकर्त्ता परमात्मा की भांति अब राम भी अकर्त्ता हो गए। बोलना, पढ़ना, लिखना, गाना.....सब कुछ छूट गया।

मुझे मेरी मस्ती कहाँ ले के आई।
जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है।।

'अब सब में एक उसी प्यारे के दर्शन होते हैं। ज्ञान की मस्ती की यह कैसी आँधी आ रही है और निजानंद का जोश कैसे बढ़ रहा है कि पृथ्वी, चाँद, सूर्य, तारों की भी सुध-बुध नहीं रही अर्थात् द्वैत बिल्कुल भासमान नहीं हो रहा, बल्कि रोंगटे खड़े हो रहे हैं और गला रूका जा रहा है।'

मन रूपी मंदिर में जो नाना प्रकार की इच्छाएँ नाच रही थी वे घर के दीपक से यानि आत्मानुभव से सब जल गयी अर्थात् अंतर् में ज्ञान अग्नि ऐसे प्रज्ज्वलित हुई कि सब प्रकार के संकल्प जल गये और रोंगटे खड़े हो गए और गला रूक गया, यह जो आनंद आ रहा है, यह क्या है ? यह संकल्पमयी शरीर की मौत का आनंद है, जो समेटने से भी नहीं सिमटता है। स्वामी राम कहते हैं कि अब तो इस पंच भौतिक को उठाना भी कठिन हो गया है, अर्थात् यह शरीर भी एक बोझ लगता है। इसे ढोना भी मुश्किल हो रहा है। प्रेम समुद्र की बाढ़ को अपने भीतर अनुभव करते हुए स्वामी राम कहते हैं कि-

जब उमड़ा दरिया उल्फल का, हर चार तरफ आबादी है।
हर रात नई इक शादी है, हर रोज़ मुबारकबादी है।।
खुश खंदा है रंगा गुल का, खुद शादी शाद मुरादी है।
बन सूरज आप दरखशाँ है, खुद जंगल है, खुद वादी है।।
नित राहत है, नित फरहत है, नित रंग नए आज़ादी है।। टेर ।।

अर्थात् जब प्रेम का समुद्र बहने लग पड़ा तो हर तरफ प्रेम की बस्ती नज़र आने लग पड़ी और रात-दिन शादी (खुशी) तथा मुबारकबादी ने मुँह दिखाना शुरू कर दिया। अब दिल सुंदर पुष्प की तरह हँसता और खिलता रहता है, चित्त नित्य आनंद-प्रसन्न है। आप ही सूर्य बनकर चमक रहा है और आप ही जंगल-घाटी बन रहा है। अहा ! कैसा नित्य आनंद है, नित्य शांति है, नित्य सर्व प्रकार की खुशी और आज़ादी हो रही है।

हर रग रेशे में, हर रोम में, अमृत भर-भर भरपूर हुआ।
सब कुफलत दूरी दूर हुई, मन शादी मर्ग से चूर हुआ।।
हर बर्ग बधाइयाँ देता है, हर जर्रह जर्रह तूर हुआ।
जो है सो है, अपना मज़हर, ख्वाह आबी नारी बादी है।।
क्या ठंडक है, क्या राहत है, क्या शादी है, आज़ादी है।।

अर्थात् हर रग और नाड़ी में तथा रोम-रोम में आनंद रूपी अमृत भरा हुआ है। जुदाई के सब दुःख और कष्ट दूर हो गए हैं और मन इस अहंकार के मरने (मौत) की खुशी से चूर हो गया है। अब हर पत्ता भी बधाईयाँ दे रहा है, क्योंकि परमाणु मात्र भी इस ज्ञानाग्नि से अग्नि के पर्वत की तरह प्रकाशमान हो गया है। अब जो है, सो अपना ही झांकी-स्थान या ज़ाहिर करने का स्थान है। चाहे वह पानी का प्राणी है, चाहे अग्नि का और चाहे हवा का (यह समस्त वास्तव में मुझको ही ज़ाहिर करने वाले हैं।)

रिम-झिम, रिम-झिम, आँसू बरसें, यह अबर बहारें देता है।

क्या खूब मज़े की बारिश में, वह लुत्फ वसल का लेता है।।
किश्ती मौजों में डूबे है, बदमस्त उसे कब खेता है।
यह गर्काबी है जी उठना, मत झिझको उफ बरबादी है।।
क्या ठंडक है, क्या राहत है, क्या शादी है, आज़ादी है।।

अर्थात् आनंद की वर्षा से आँसू रिम-झिम बरस रहे हैं, और यह आनंद का बादल क्या-क्या अच्छी बहार दे रहा है। इस ज़ोर की वर्षा में वह (चित्त) क्या खूब अभेदता (एकता) का आनंद ले रहा है। शरीर-रूपी नौका तो आनंद की लहरों में डूबने लग रही है, मगर वह सच्चा (आनंद में) उन्मत्त उसे कब खेता है ? (वह तो शरीर का ख्याल नहीं करता) क्योंकि उसके लिए यह (देहाध्यास का) डूबना, वास्तव में जी उठना है। इसलिये हे प्यारों ! इस मौत से मत झिझको। (क्योंकि झिझकने में अपनी बरबादी है)। इस मृत्यु में तो क्या ही ठंडक है ! क्या ही आराम है ! और क्या ही आनंद और क्या ही स्वतंत्रता है ! इसका कुछ वर्णन नहीं हो सकता है।

इल्लत मालूल में मत डूबो, सब कारण-कार्य तुम ही हो।
तुम ही दफ्तर से खारिज़ हो, और लेते चारज तुम ही हो।
तुम ही मसरूफ बने बैठे, और होते हारिज तुम ही हो।
तू दावर है, तू वुकला है, तू पापी है, तू फरियादी है।।
नित राहत है, नित फरहत है, नित रंग नये आज़ादी है।।

अर्थात् हेतु (कारण) और फल (कार्य) में मत डूबो, क्योंकि सब कारण-कार्य तुम ही हो, और जो दफ्तर से खारिज़ होता है अथवा जो नौकर होता है, वह सब तुम आप हो। तुम ही सब काम में प्रवृत्त होते हो। तुम ही उसमें विक्षेप डालनेवाले होते हो। तुम ही न्यायकारी, तुम ही वकील और तुम ही पापी और फरियादी होते हो। आहा ! क्या नित्य चैन है, नित्य शांति है और नित्य राग-रंग और आज़ादी है।

'ग़र उपदेशक में दोष दिखाई दे.....

-साधिका डॉ. प्राग्भा विराट

स्वामी राम कहते हैं -

''उन लोगों के तर्क झूठे हैं, जो यह कहते हैं कि हम अमुक शिक्षक से इसलिए कुछ भी न ग्रहण करेंगे, क्योंकि वह जैसा उपदेश देता है, स्वयं तद्नुसार आचरण नहीं करता है।''

हमारा प्रयोजन उस शाश्वत सत्य से हो, जो हमें उस शिक्षक, उपदेशक से प्राप्त हो रहा है। यदि हम उसे अपने जीवन में उतार लें, तो हमें आनंद मिलेगा। हमारे संशयों का, शंकाओं का समाधान होगा। भले ही उपदेशक में हज़ारों दोष हो, वह कितनी ही भूलें अथवा त्रुटियाँ करता हो, उनके लिए वह स्वयं उत्तरदायी है, हमें उनसे क्या प्रयोजन ?

इसे हम इस तरह देखें कि वह उपदेशक यदि जैसा उपदेश दे रहा है, उसके अनुसार बर्ताव नहीं कर रहा है, तो इसके पीछे कुछ कारण रहे होंगे। हो सकता है, उसकी पारिवारिक, सामाजिक परिस्थितियाँ, वायुमण्डल अथवा भौगोलिक स्थितियाँ जहाँ वह रहता है, उसे ऐसा नहीं करने देते। हाँ ! आप स्वयं में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए उसके द्वारा बताए गए जीवनोपयोगी सूत्रों का प्रयोग कर सकते हैं।

जैसे, एक वैज्ञानिक अपने मस्तिष्क में एक hypothesis निर्मित करता है। उसके आधार पर वह कुछ नमूने-नक्शे देता है, जिन्हें बनाने के कुछ विशेष यंत्रों की आवश्यकता है। हमारे भीतर भले ही वो नक्शे या योजनाएँ बनाने की कुव्वत न हो लेकिन हम उन नक्शों के आधार पर उन यंत्रों का निर्माण कर, उनका प्रयोग कर सकते हो। स्वामी राम कहते हैं कि' श्रमजीवियों

के कष्ट का कारण यही है कि जो नक्शे और योजनाएँ उन्हें दी जाती है, वे उनको ग्रहण करके व्यवहार में नहीं लाते हैं।'

अगर कोई orthopaedic doctor बिमार है, तो क्या हम उसके diagnosis पर भरोसा नहीं करेंगे ? उसके द्वारा prescribed दवाईयाँ मात्र इसलिए नहीं लेंगे कि वह अपने हृदय रोग के लिए किसी अन्य डॉक्टर की सेवाएँ ले रहा है ? अगर ऐसा है तो हम गलती पर हैं। एक orthopaedic डॉक्टर हमें हड्डी रोग से संबंधित सही दिशा-निर्देश देगा लेकिन स्वयं अपने हृदय रोग के लिए उसे अन्य विशेषज्ञ पर ही निर्भर रहना होगा। वह अपना ईलाज नहीं कर पाएगा, किंतु उस पर भरोसा न करके हम अपना ही नुकसान कर रहे हैं।

इसी तरह लोग अक्सर पुस्तक पढ़ने से पहले लेखक के बारे में जानते-परखते हैं, उसके व्यक्तिगत जीवन पर टीका-टिप्पणी करते हैं। स्वामी राम कहते हैं 'सत्य को उसी के गुण-दोषों के अनुसार परखो। व्यक्ति चाहे दुष्ट हो, जो सत्य वह तुम्हें परोस रहा है, तुम उसे जानो, उस पर विवेचन करो, उसे ग्रहण करो।

वे एक उदाहरण देते हुए कहते हैं कि भारतवर्ष में खेतों की सिंचाई के लिए अक्सर किसान कुँओं पर रहट लगाता है। कुँओं से पानी रहट के द्वारा एक विशेष प्रकार के हौद में गिरता है, जहाँ से छोटी-छोटी नालियों द्वारा वह खेतों में पहुँचता है। जब तक पानी कुँए में है या उस हौद में है या फिर उन नालियों में से गुज़र रहा है, वहाँ हरियाली या वनस्पति नहीं उगती लेकिन जब वह पानी खेतों में पहुँचता है, तब वह भूमि उर्वरा और संपन्न हो जाती है, फसलें लहलहा उठती है। अब यहाँ पर ये तर्क बेमानी है कि यह जल खेतों में फसल उगाने के लायक नहीं है। क्योंकि वह जब कुएँ, हौद या नाली में था, तब वहाँ कोई हरियाली नहीं थी। इसलिए ज्ञान जहाँ से भी मिले, उसे ग्रहण कर लीजिए।

सत्य को किसी व्यक्ति से जोड़कर नहीं, वरन् 'सत्य' को उसी के गुण-दोषों से परखो। स्वामी राम कहते हैं कि-'किसी भी आध्यात्मिक उपदेश को उसी उपदेश की भलाई-बुराई के अनुसार परखो। परखकर उसे अपने चरित्र में उतारो। अपने व्यक्तिगत के भाव से ऊपर उठो।'

जय हो !! जय हो !! जय हो !!

इच्छापूर्ति का रहस्य

-स्वामी राम का अनुभव

अपने मज़े के खातिर गुल छोड़ ही दिये जब।
रूह-ए- ज़मी के गुलशन मेरे ही बन गये सब।।

जितने जुबान के रस थे कुल तर्क कर दिये जब।
बस ज़ायके जहाँ के मेरे ही बन गए सब।।
खुद के लिए जो मुझसे दीदों की दीद छूटी।
खुद हुस्न के तमाशे मेरे ही बन गये सब।।
अपने लिए जो छोड़ी ख्वाहिश हवाखुरी की।
बादे-सबा के झोंके मेरे ही बन गये सब।।
निज की ग़रज से छोड़ा सुनने की आरजू को।
अब राग और बाजे मेरे ही बन गये सब।।
जब बेहतरी के अपनी फ़िक्र- औ'-ख्याल छूटे।
थफ़क्र- औ'-ख्याले-रंगी मेरे ही बन गये सब।।
आहा ! अजब तमाशा मेरा नहीं है कुछ भी।
दावा नहीं ज़रा भी इस जिस्मो-इल्म पर ही।।
यह दस्तो-पाँ हैं सबके, आँखें ये हैं तो सबकी।
दुनियाँ के जिस्म लेकिन, मेरे ही बन गये सब।।

आत्म-कृपा

-स्वामी राम के प्रवचनांश....

सर आइज़ेक न्यूटन एक महान् वैज्ञानिक थे। प्रारंभ में उन्होंने कभी भी यह नहीं सोचा था कि वे विश्व की इतनी अधिक सेवा कर सकेंगे। वे तो केवल ज्ञानार्जन के पीछे दौड़ रहे थे, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार पंतगे दीपक की ज्वाला के पीछे भागते रहते हैं। तथ्य यही है कि न्यूटन अपने ज्ञानार्जन के कर्त्तव्य-पालन में जी-जान से लगे थे, उन्हें अन्य किसी बात से लगाव नहीं था, ज्ञान-तृप्ति ही उनका एकमात्र लक्ष्य था, फलस्वरूप इस लगन, निष्ठा, कार्य-परायणता से वे विश्व के महानतम् उद्धारक, महानतम वैज्ञानिक, महानतम परोपकारी बन गए। आत्मनिष्ठा, आत्म-निर्भरता, आत्म-विश्वास, आत्मकृपा का यही फल होता है। उनका दायरा बढ़ गया और न्यूटन के दायरे से लोग आज भी लाभांवित हो रहे हैं।

इसलिए लोगों को अपने क्षेत्र का विस्तार करते रहना चाहिए। विस्तार कैसे होता रहता है ? आप देखेंगे कि यदि एक व्यक्ति खेत में खड़े होकर आवाज़ दे तो उसकी आवाज़ कुछ ही दूरी तक सुनाई देती है। पर वही व्यक्ति, यदि ऊँची मीनार पर चढ़ जाये या किसी पर्वत शिखर पर और वहाँ से आवाज़ दे तो पहले की अपेक्षा अधिक दूरी तक उसकी आवाज़ को सुना जा सकता है। यह स्वाभाविक है। इसलिए आप भी अपने क्षेत्र का विस्तार करते जाइए, दृष्टि को व्यापक बनाते जाइए। फिर आपसे किरणें स्वतः ही प्रस्फुटित होगी। यही प्रकृति का नियम है।

एक बार की घटना है। राम अपने कुछ सहयोगियों के साथ हिमालय

के गंगोत्री के दर्शन करने जा रहा था। परंतु मार्ग में साथी-संगी एक दूसरे से बिछुड़ गए। उनके शरीरों पर झाड़ियों और काँटों की खरौंचे लग गयी, वे ज़ख्मी हो गये। काफी परेशान थे वे सभी, पर अलग-थलग होने के कारण वे एक-दूसरे की पुकार सुन भी नहीं पाते थे। थोड़ी देर में राम वहाँ एक पहाड़ की चोटी पर पहुँचा और उसने ज़ोर से आवाज़ दी और पुकारा। उसके साथियों ने राम की आवाज़ सुनी और आवाज़ के सहारे वे सभी राम के पास आ पहुँचे और सभी मिल गये। इसी प्रकार जब तक हम पतित रहेंगे, गिरे रहेंगे तब तक हम न तो एक-दूसरे की आवाज़ ही सुन सकेंगे और न ही मिल सकेंगे वरन् एक-दूसरे से दूर ही बने रहेंगे। इसलिये हमको ऊँचा उठना होगा, उन्नति करनी होगी, तभी दूसरे लोग हमारी बात ध्यान से सुनेंगे और अनुसरण करेंगे तथा मिलते रहेंगे।

आरज़ू

तू को इतना मिटा, कि तू न रहे।
और तुझमें दुई की बू न रहे ।।1।।
जुस्तजू भी हजाबे-हुसनी है।
जुस्तजू है कि जुस्तजू न रहे।।2।।
आरजू भी विसाले-पर्दा है।
आरज़ू है कि आरज़ू न रहे।।3।।

-स्वामी राम

आर्हत् गीताः तत्वार्थ सूत्र
पंचम अध्याय

(गतांक से आगे)

विगत सूत्र में हमने जाना कि 'द्रव्य' गुण व पर्याय रूप है। द्रव्य का सहभावी गुण 'गुण' है व क्रमभावी गुण 'पर्याय' है। जो क्रमानुसार उत्पन्न व नष्ट होता रहता है, वह पर्याय है तथा जो सदा ध्रुव रूप रहता है, वह 'गुण' है।

प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि पर्यायें, जो सदा बदलती रहती है, उन परिवर्तनों का आधार क्या है ? परिवर्तनों का आधार 'काल' है। हर परिवर्तन 'काल' का गुण है। काल कह दो या वर्तन कह दो, एक ही बात है। फिर भी कई आचार्य काल को स्वतंत्र व मौलिक द्रव्य मानते हैं तथा कई आचार्य काल को समस्त द्रव्यों में पाई जाने वाली पर्यायात्मक सत्ता ही मानते हैं, यानि काल को स्वतंत्र इकाई नहीं मानते हैं।

श्वेतांबर परंपरा में उपलब्ध तत्वार्थ सूत्र में काल को स्वतंत्र द्रव्य मानने में संदेह कहा गया है किंतु दिगंबर परंपरा में निःसंदेह काल को स्वतंत्र द्रव्य कहा गया है। इसीलिए पाँचवे अध्याय के इस 38 वें सूत्र की रचना दोनों परंपराओं में किंचित् भिन्नता लिए हुए है। श्वेतांबर परंपरा के अनुसार यह सूत्र इस प्रकार है-

सूत्र-कालश्चेत्येके ।।38।।

अर्थ- कोई-कोई आचार्य कहते हैं कि काल भी द्रव्य है।

दिगंबर परंपरा में वर्णित यह सूत्र इस प्रकार है-

सूत्र -कालश्च ।।38।।

अर्थ-काल भी द्रव्य है।

विवेचन-काल को स्वतंत्र द्रव्य मानने वाले आचार्य काल को समस्त द्रव्यों की परिणमन क्रिया में सहायक निमित्त तत्व मानते हैं। जिस प्रकार जीव व

अजीव की गति में सहायक तत्व को धर्मास्तिकाय कहते हैं, जीव व अजीव की स्थिति में सहायक तत्व को अधर्मास्तिकाय कहते हैं, जीव व अजीव को स्थान देने में सहायक को आकाशास्तिकाय कहते हैं, उसी प्रकार जीव व अजीव में बदल रही पर्यायों के निमित्तभूत तत्व को 'कालद्रव्य' कहते हैं। सूत्र संख्या 25 के अनुसार काल के लक्षण 'वर्तना परिणाम क्रिया परत्वापरत्वे च कालस्य' है। अर्थात् काल में वर्तन यानि परिवर्तन का, बड़े-छोटे करने का, नए को पुराना, पुराने को नया करने का गुण है। किंतु एक बात अवश्य है कि काल द्रव्य अस्तिकाय रूप नहीं है। वह अन्य अस्तिकाय द्रव्यों की भाँति प्रदेशों के समूह रूप नहीं है। काल का अस्तित्व समय मात्र है। अद्धा रूप है। अविभाज्य निरंश अंशरूप है। इसी कारण उसका समूह संभव नहीं है। अतः काल को कालास्तिकाय कहा जाना संभव नहीं है। किंतु समय कितना ? क्या समय की गणना संभव है ?

इस प्रश्न को समाधानित करते हुए वाचक उमास्वाति जी अगले सूत्र में कहते हैं कि -

सूत्र -सोऽनन्तसमयः ।।39।।

अर्थ- वह काल अनंत समय वाला है।

'समय' वर्तमान क्षण मात्र है। या यूँ कह दो कि वर्तमान काल एक समय मात्र ही है किंतु भूत-भविष्य की अपेक्षा से यह अनंत समय वाला है। प्रवाह रूप से समय अनंत है, गहराई में अनंत है-समय। किन्तु सत्तारूप से समय मात्र है, अद्धा है, अविभाज्य अंतिम कालाणु मात्र है। चूंकि काल द्रव्य के प्रदेश नहीं है इसलिए वह संख्यात, असंख्यात, अनंत प्रदेशी रूप तो हो नहीं सकता है, वह तो समय मात्र है। किंतु चूंकि काल का समय रूप वर्तना अनादि अनंत है इसलिए काल को अनंत समय रूप कह दिया गया है। साथ ही एक ही समय में काल द्रव्य अनंत जीवों व अजीवों की पर्याय परिणमन का निमित्त बनता है, इस अपेक्षा से भी वह अनंत समय वाला है। भगवती सूत्र शतक 25 उद्देशक 5 में कहा गया है कि-

अणंता समया

अर्थात् काल द्रव्य में अनंत समय होते हैं। आगम सूत्रों में काल के दो रूप बताए गए हैं, 1. निश्चय काल 2. व्यवहारकाल। वह निश्चय काल समय

के रूप में अनंत है। तथा व्यवहार काल भी समय, आवलिका, आणपाण, मुहूर्त, दिन, पक्ष, मास, संवत्सर, युग, पल्योपम, सागरोपम से लेकर अनंत अवसर्पिणी व उत्सर्पिणी रूप है। यह व्यवहार काल भी गणनाओं से परे अनंत रूपा है, जो सर्वमान्य भी है। इस प्रकार हम देखें कि काल द्रव्य एक स्वतंत्र द्रव्य है, जो अनंत समय रूप है। और सभी द्रव्यों की पर्याय परिवर्तन का निमित्त भूत है। काल की अंतिम अविभाज्य इकाई 'समय' कहलाती है। प्राचीन आचार्य कहते हैं कि एक पलक झपके उतने मात्र में असंख्य समय बीत जाते हैं, समय इतना सूक्ष्म है कि उसकी गणना असंभव है। वह मात्र अनुभवगम्य है, कथनीय नहीं है। जो ऐसे समय को अनुभव कर जीते हैं, वे ही समयनाथ सदाशिव परमात्मा कहलाते हैं।

'समय' का अनुभव या समय को जीना मात्र तब ही संभव है जबकि हम मन की भूत भविष्य वर्तना की आदत से परे हो पाएँ। सामायिक व्रत का अभ्यास इसीलिए किया जाता रहा है कि एक साधक अपने अतीत को विसर्जित कर सके और भविष्य से मुक्त होकर मात्र वर्तमान क्षण को जीए। समय को जीए। समय में उपस्थित हो सके। वर्तमान क्षण ही अपनी गहराई में 'अनंत' है। इसीलिए कहा गया है कि 'सोऽनन्तसमयः' अर्थात् समय अनंत है। वह लंबा-चौड़ा नहीं है, किंतु गहरा है। काल का आयाम अस्तित्व का चतुर्थ आयाम है, जिसमें गहराई ही गहराई है, अनंत गहराई है। अनंत गहराई को कैसे समझना ? इसे कहा नहीं जा सकता। फिर भी अनुभव ज्ञानी ऋषि मुनि कहते हैं कि अनंत में से अनंत निकालो, तब भी अनंत ही शेष रहे, 'पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते'। यही अनंत का स्वरूप है। यह पूर्ण है। ईशावास्योपनिषद् कहता है कि पूर्ण से पूर्ण निकालो, तब भी पूर्ण ही शेष बचता है। अस्तित्व के शेष तीन आयाम लंबाई-चौड़ाई व ऊँचाई है। ये तीनों आयाम आकाश द्रव्य से संबंधित है व चौथा आयाम काल है, जिसे आत्मज्ञानी श्री विराट गुरूजी 'कालाई' कहते हैं, जो पूर्ण शांत चेतना के भीतर वर्तमान होता है, और यह अनंत समय रूपा है। इस आयाम को वही उपलब्ध हो सकता है, जो छः आवश्यक साधना के द्वारा षट् चक्र भेदन कर चुका हो। ये षट्आवश्यक साधना क्या है, इसे 'समयवज्जिका' नामक पुस्तक से जाना जा सकता है।

(क्रमशः)

जिज्ञासा समाधान

प्रश्न-शरीर छोड़ने के अनन्तर क्या हम प्रेत-संसार में अपने आप को पूर्णता की ओर ले जा सकते हैं ?

उत्तर- वेदांत के अनुसार हम भावी जन्मों में अपने आपको पूर्ण करते रहते है। हमारे भावी जन्म हैं, हमारे भावी जीवन हैं, जिनमें हम अपने को पूर्ण करते हैं।प्रेतलोक तो हमारे लिए हर 24 घंटों में आने वाले स्वप्न के तुल्य हैं।

प्रश्न-क्या हम आध्यात्मिक रीति से उनकी सहायता कर सकते हैं, जो जीव-आत्माएँ यहाँ से जा चुकी हैं ?

उत्तर-हाँ, कर सकते हो। उनके चित्र या उनकी मानसिक मूर्तियाँ अपने सामने रखो और फिर सोचो, अनुभव करो, भान करो कि वे परमेश्वर रूप है।ऐसा करने से तुम उनकी सहायता करोगे।उनके लिए अच्छे विचार करो, उनके लिए अत्युत्तम भावनाएँ रखो।इस प्रकार तुम उनकी सहायता करोगे तथा अपने आपकी भी सहायता कर सकोगे।

प्रश्न-क्या वे कभी स्थूल बातों में हमारी सहायता करते हैं ?

उत्तर-यदि इस स्थूल लोक में दूसरे लोग तुम्हें सहायता दे सकते हैं, तो हम कह सकते हैं कि मृतक भी तुम्हारी सहायता कर सकते हैं।किंतु वेदांत के अनुसार स्थूल लोक में भी तुम्ही स्वयं अपने आप के सहायक बनते हो, फिर मृतकों की सहायता की चर्चा ही क्या !तुम्ही हो जो अपने आपकी सहायता करते हो, चाहे मृतक की हैसियत से करो, चाहे जीवित शरीरों के द्वारा।इसलिए वेदांत

(शेष पृष्ठ 54 पर)

बुद्धि का चमत्कार

एक व्यक्ति ने एक अंग्रेज़ आदमी का खून कर दिया था किंतु प्रमाण के अभाव में न्यायाधीश ने उस खून करने वाले व्यक्ति को निर्दोष छोड़ दिया। उस अंग्रेज़ की पत्नी जिसके पास विराट संपति थी, उसने यह निश्चय किया कि पति के हत्यारे को मैं अवश्य ही दण्ड दिलाऊँगी। भले ही उसके लिए मुझे कितना भी खर्च करना पड़े।

सेशन कोर्ट और हाईकोर्ट से वह मुक्त हो चुका था, अब केवल उच्चतम न्यायालय ही शेष रहा था। उसने बड़े से बड़ा बेरिस्टर नियुक्त किया, पर सफलता न मिलने से वह निराश हो गई थी किंतु उसका प्रयत्न रूका न था। उसने सुना था कि पंड़ित मोतीलाल नेहरू संभव है मुझे न्याय दिला सके। उसने पंडित मोतीलाल नेहरू को अपना वकील नियुक्त किया। सारी फाइलें मोतीलाल जी के सामने रखी गई पर उन्होंने फाइलें बिना देखे ही लौटा दी।

न्यायालय में केस प्रारंभ हुआ पर मोतीलाल जी चुपचाप सुनते रहते, किसी भी प्रकार का कोई तर्क उपस्थित नहीं करते। उस अंग्रेज़ पत्नी को अत्यधिक निराशा हुई। परंतु पंड़ित मोतीलाल जी के सामने कुछ कह भी नहीं सकती थी।

अंत में तर्क और प्रमाण के अभाव में न्यायाधीश ने उस व्यक्ति को निर्दोष करार दिया। वह खूनी फूला न समा रहा था। मोतीलाल जी अपने स्थान से उठे और उस खूनी के पास पहुँचे। उसे बधाई देते हुए कहा-'आप

उस दिव्य शक्ति को धन्यवाद दीजिए जिससे आप पूर्णतः निर्दोष छूट गये हैं और भविष्य के लिए ऐसी प्रार्थना करो कि ऐसी भूल दुबारा नहीं करूँगा।

खूनी फूले नहीं समा रहा था। उसके मुँह से यह शब्द सहसा ही निकल गए-'क्या मैं मूर्ख हूँ जो बार-बार ऐसी गलती करूँगा ?'

मोतीलाल जी बोले-'लार्ड; अब भी आपको कोई अन्य प्रमाण चाहिए जब कि अपराधी ने स्वयं ही अपनी गलती स्वीकार कर ली है।'

यह है बुद्धि का चमत्कार। सभी देखते रह गये।

श्रद्धांजली

लुधियाना निवासी धर्मनिष्ठ सुसावक श्री अभयकुमार जैन S/o श्री कस्तूरी लाल जैन (समाना वाले) का दिनांक 12.02.2017 को स्वर्गवास हो गया। आप Division Engineer (Telecom) के पद पर एक ईमानदार छवि वाले अधिकारी के रूप में रिटायर्ड हुए। वे अपने पीछे तीन पुत्र एवं दो बेटियाँ छोड़ गए है।

श्री अभय कुमार जी, श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, मंत्री एस.एस. जैन सभा, एकता विहार, कुरूक्षेत्र के बड़े भाई थे। 'चरम मंगल' परिवार दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजली अर्पित करता है। आपके परिवार ने 'चरम मंगल' को 2000 रूपये की राशि ज्ञान पूजा के रूप में भेंट की। आभार।

(पृष्ठ सं. 52 का शेषांक)

आप से चाहता है कि बाहर कुछ मत ढूँढिये, अपना केन्द्र अपने अंदर रखिये और हर एक वस्तु को अंदर में ही ढूँढिये और वहीं से आशा कीजिए। यदि तुम में पात्रता है, तो तुम्हें अभिलाषा करने की कोई ज़रूरत नहीं। इच्छित वस्तुएँ स्वयं तुम्हारे पास आएगी, तुम्हारे पास लाई जाएगी। यदि तुम अपने आपको योग्य बना लो, तो सहायता अवश्यमेव तुम्हें आ मिलेगी।

लोकमान्य संत रूपचंद जी पर विशेष डाक कवर व स्टाम्प का विमोचन 11 फरवरी को

हुबली ! लोकमान्य संत शेरे राजस्थान पूज्य श्री रूपचंद जी म.सा. 'रजत' पर भारत सरकार एवं डाक विभाग राजस्थान की ओर से एक विशेष डाक कवर का विमोचन 11 फरवरी को मारवाड़ जंक्शन स्थित रूपरजत विहार में किया जाएगा। कांठा प्रांतीय ओसवाल जैन साजना संघ हुबली के पूर्व अध्यक्ष, संस्कार स्कूल के संस्थापक अध्यक्ष श्री महेंद्र सिंघी ने बताया कि पूज्यश्री रूपचंद जी म.सा. 'रजत' ने अल्प आयु में भौतिक सुखों को त्याग कर दीक्षा ग्रहण की थी। आज 92 वर्ष की उम्र में वे राजस्थान, गुजरात, दिल्ली, हरियाणा, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडू सहित पूरे देश भर में लगभग 50 हज़ार किलोमीटर से भी ज्यादा पदयात्रा एवं चातुर्मास कर अहिंसा, जीवदया व मानव एकता का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। संत रूपचंद जी म.सा. 'रजत' राजस्थान के अग्रणी संतों में से एक है। उनकी प्रेरणा से अनेक स्कूल, चिकित्सालय, गौशालाएँ, छात्रावास देश भर में चल रहे हैं। राजस्थान डाक विभाग ने केंद्र सरकार के सहयोग से रूपमुनि की प्रेरणा से बना कांठा प्रांत का गौरव रूपरजत विहार के प्रथम वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में एक विशेष पोस्टल कवर व मय स्टांप का विमोचन करने का निर्णय किया है। सुभाष डंक ने बताया कि डाक कवर के विमोचन के लिए संस्कार स्कूल हुबली व प्रांतीय युवा संगठन हुबली का विशेष सहयोग रहा है।

आगमवेत्ता साध्वी वैभवश्री जी 'आत्मा' का चातुर्मास पुणे में

पुणे। आगमवेत्ता साध्वी वैभवश्री जी 'आत्मा', साध्वी देशनाश्री जी म.सा., साध्वी चरमश्री जी म.सा 'मौनीमाता', साध्वी नियागश्री जी म.सा., साधिका पावनी जी, साधिका प्राग्भा विराट जी का 2017 का चातुर्मास वर्द्धमान प्रतिष्ठान, शिवाजी नगर, पुणे में होगा। श्री विलास राठौड़, अध्यक्ष, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, वर्द्धमान प्रतिष्ठान ने बताया कि श्रीसंघ जैन समाज की एक विद्वत् विभूति की चातुर्मास स्वीकृति प्राप्त कर अत्यन्त उत्साहित है। पूज्या गुरूवर्याश्री जी का चातुर्मास प्रवेश जुलाई माह के प्रारंभ में ही संभावित है। श्री राठौड़ के अनुसार चातुर्मास के दौरान दैनिक प्रवचन व प्रार्थना के साथ विविध जिज्ञासा समाधान सत्र, स्वाध्याय सत्रों के अतिरिक्त सप्ताहांत में हर आयु वर्ग के लिए विभिन्न कार्यशालाएँ आयोजित की जाएगी। बाहर से आने वाले जिज्ञासु, श्रावक-श्राविकाओं व दर्शनार्थियों का श्रीसंघ स्वागत करता है।

चातुर्मास हेतु संपर्क सूत्र
श्री विलास राठौड़, अध्यक्ष
फोन : 8805047007
श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन संघ
वर्द्धमान प्रतिष्ठान, शिवाजी नगर
Audi शोरूम के पास,
सेनापति बापट रोड, पुणे-16

'स्वयं को जानों' कार्यशाला आयोजित

9-12 फरवरी, खार। 'स्वयं को जानें' कार्यशाला में प्रतिभागियों ने दिनचर्या के विविध विषयों को यतनापूर्वक सम्पन्न करने की जानकारी प्राप्त की। आगमवेत्ता साध्वी वैभवश्री जी 'आत्मा' की सुशिष्या साधिका प्राग्भा विराट के निर्देशन में यह कार्यशाला सम्पन्न हुई। दिनचर्या की आवश्यक क्रियाओं, जैसे सोना, जागना, भोजन करना, चलना-बोलना व दैनिक कार्य जागृतिपूर्वक कैसे करना-इन पर विस्तार से जानकारी दी गई। अंतिम दिन 'मन' की क्रियाविधि को जानने पर चर्चा हुई। मंत्री श्री उमेश जी ने बताया कि हमारा श्री संघ ऐसे कार्यक्रमों को पाकर गुरूवर्या श्री जी का आभार व्यक्त करता है।

सलाहकार दिनेशमुनि जी म.सा का चातुर्मास पूना में

14 फरवरी, पूना। विश्वसंत उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी म.सा. एवं जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट श्री देवेन्द्र मुनि जी म.सा के सुशिष्य श्रमण संघीय सलाहकार श्री दिनेश मुनि जी म.सा., डॉ. श्री द्वीपेन्द्र मुनि जी, डॉ.श्री पुष्पेन्द्रमुनि जी का वर्ष 2017 का चातुर्मास पूना शहर के कात्रज क्षेत्र के श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ दत्तनगर, आनंद दरबार (आगम मंदिर के पास)में होगा।

मुनित्रय के वर्षावास की स्वीकृति पर पूनावासी प्रसन्न है। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ (दत्तनगर) के अध्यक्ष बालासाहेब धोका के नेतृत्व में श्रीसंघ का एक श्रावक मंडल माधवनगर (महाराष्ट्र) 13 फरवरी को पहुँचा जिसमें श्रीसंघ दत्तनगर, श्री संघ बालाजी नगर, श्री संघ वडगाँव धायरी, श्रीसंघ वारजे मालवाडी, श्रीसंघ संतोष नगर के प्रमुख सदस्यों ने चातुर्मास विनती प्रस्तुत की। पाँचों संघों के संयुक्त चातुर्मास को सलाहकार प्रवर ने स्वीकार कर आगामी वर्ष 2017 के चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान की। इस अवसर पर महाराष्ट्र प्रवर्त्तक पूज्यश्री कुंदनऋषि जी म.सा द्वारा प्रेषित चातुर्मासिक स्वीकृति पत्र का भी वाचन किया गया। संघपति बाबासाहेब धोका ने जानकारी देते हुए बताया कि चातुर्मास में मुनित्रय के सान्निध्य में धार्मिक/नैतिक/सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि मुनित्रय के जून के प्रथम सप्ताह तक पूना पहुँचने की संभावना है।

खार में विनय विराट जी का उद्‌बोधन

15 फरवरी 2017। 'कर्म-फल' को कैसे बदलें ? विषय पर ज्योतिषाचार्य श्री विनय विराट ने अंहिसा भवन, खार में विस्तार से विवेचन किया। आचार्य सुशीलमुनि जी के सुशिष्य श्री विवेक मुनि जी म.सा. व आगमवेत्ता साध्वी वैभवश्री जी म.सा. 'आत्मा' के सानिध्य में हुए इस सत्र में श्री विनय जी ने कर्मों के रस परिवर्तन के बारे में जानकारी दी। आपने बताया कि जब तक कुंडली में 'निकाचित् निर्धन योग' न हो, तब तक हर व्यक्ति में संपन्न होने की, धनी बनने की पूरी-पूरी संभावना है। इसलिए अपने Mindset को बदलें। स्वयं को सदैव प्रफ्फुल्लित रखें, स्वयं को प्रेरित करें।

विनय जी ने प्रत्येक दिन की शुरूआत को सार्थक व उपयोगी बनाने

की प्रेरणा दी। इस हेतु उन्होंने 1 घंटे सामायिक करने व षट्काय आभार प्रार्थना करने की भी बात कही। उन्होंने अपने अनुभवों को साझा करते हुए जीवन दृष्टि को सम्यक् व सकारात्मक बनाने के अनेकों टिप्स भी दिए। उपस्थित सभी लोगों ने एकमत से इस सत्र को अत्यन्त उपयोगी बताया।

खार में सामूहिक प्रवचन

19 फरवरी, खार। प्रवर्तक भंते श्री पारस मुनि जी म.सा., वाणी के जादूगर श्री रमणीक मुनि जी म.सा. व आगमवेत्ता साध्वी वैभवश्री जी म.सा. 'आत्मा' के सामूहिक प्रवचन अहिंसा भवन , खार में हुए। पूज्य श्री रमणीक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सतयुग में मंत्र के द्वारा, द्वापर युग में यंत्र के द्वारा व त्रेता युग में तंत्र द्वारा कार्य संपन्न होते थे लेकिन कलयुग में षड्यंत्र द्वारा कार्य किए जा रहे है। इसका कारण है कि व्यक्ति हर जगह दिमाग से अधिक काम ले रहा है। यहाँ तक कि धर्म क्षेत्र या धर्मक्रिया भी वह हृदय की बजाए दिमाग से कर रहा है।

आगमवेत्ता साध्वी वैभवश्री जी म.सा. 'आत्मा' ने फरमाया कि व्यक्ति जब प्राप्त योग्यताओं का दुरूपयोग करता है तो वह अपने अगले जन्म में मंदबुद्धि के रूप में जन्म लेता है। दुर्लभ मनुष्य योनि प्राप्त करके भी वह मुक्ति यात्रा के लिए कोई पुरूषार्थ नहीं कर पाता। ऐसा जीव देव योनि भी प्राप्त करता है, तो परमाधामी देव बनकर सबको सताता है। इसलिए प्राप्त योग्यताओं का, क्षमताओं का सदैव सजगतापूर्वक उपयोग हो।

साध्वीश्री ने इसे आगे और विस्तार देते हुए समझाया कि जब हम प्रमादवश या बेईमानी में किसी गलत कार्य में या किसी के प्रति हो रहे दुर्व्यवहार में अपना सहयोग करते हैं, अपनी वोटिंग देते हैं तब भी हम प्राप्त समझ का दुरूपयोग कर कर्म बंधन करते हैं।

14-20 फरवरी प्रतिदिन सायं 8:30-9:30 तक आयोजित हुए जिज्ञासा समाधान सत्रों में पूज्य गुरूवर्या श्री जी द्वारा जिज्ञासुओं ने आगमवाणी से समाधान प्राप्त किया। प्रातःकालीन स्वाध्याय सत्र में साध्वी देशनाश्री जी म.सा. द्वारा खार वासियों ने विविध विषयों पर नवीन दृष्टिकोण से समझ प्राप्त की। आत्मज्ञानी पूज्य श्री विराट गुरूदेव की पुस्तक 'समाधान के सूर्य' पर आयोजित स्वाध्याय सत्र का सभी ने भरपूर लाभ लिया।

भगवान महावीर जन्मजयंती का आयोजन संगठित रूप में

दिल्ली। भगवान महावीर जयंती महोत्सव महासमिति एवं दिल्ली की समस्त श्वेतांबर स्थानकवासी जैन सभाओं द्वारा श्रमण भगवान महावीर जन्म जयंती के अवसर पर जैन समाज द्वारा संगठित रूप से प्रथम बार संपूर्ण विश्व में भगवान महावीर के सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार हेतु तालकटोरा स्टेडियम में एक भव्य समारोह का आयोजन रविवार, 9 अप्रैल 2017 को किया जा रहा है।

आज के बदलते परिवेश में भगवान महावीर प्रणीत वैश्विक समस्याओं के समाधान हेतु धर्म, अध्यात्म, दर्शन समन्वित जीवन सूत्र सत्य, अहिंसा व अनेकांत जैसे सिद्धांतों की परम आवश्यकता है। भगवान महावीर के इन संदेशों को जन-जन तक पहुँचानें एवं सामाजिक एकजुटता हेतु यह महोत्सव आयोजित किया जा रहा है। महोत्सव महासमिति के मुख्य संयोजक समाजरत्न श्री सुभाष जी ओसवाल जैन एवं अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन के द्वारा आयोजन को गरिमा देने का पूरा प्रयास किया जा रहा है।

इस महोत्सव में श्रद्धेय संत-साध्वी जी म.सा. तथा देश के प्रसिद्ध राजनैतिक गणमान्यों के आगमन के लिए उनसे विनती व निवेदन किया जा

रहा है। इसके अतिरिक्त डॉक्यूमेंट्री फिल्म का प्रदर्शन तथा स्कूली बच्चों द्वारा भगवान महावीर के सिद्धांतों पर भव्य प्रदर्शनी, श्रमण संघीय आचार्य सम्राट पूज्य श्री शिवमुनि जी म.सा. द्वारा श्रमणी सूर्या महासाध्वी डॉ. सरिता जी म.सा. को उत्तर भारतीय प्रवर्तिनी पद दिये जाने पर जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली द्वारा चादर महोत्सव, देश के सुप्रसिद्ध भजन गायकों द्वारा भक्ति संगीत के माध्यम से अहिंसा के अग्रदूत का गुणगान तथा जैन समाज का प्रथम अत्यन्त उपयोगी ऑल इन वन मोबोईल एप्लीकेशन 'जैन सेवा' का भी शुभारंभ किया जायेगा।

दिल्ली की समस्त जैन सभाओं द्वारा संगठित रूप से प्रथम बार यह

सुश्री श्रुति बनी साध्वी मोक्षदाश्री

6 फरवरी, इचलकरंजी। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, इचलकरंजी के तत्वावधान में अभूतपूर्व जनमैदिनी की साक्षी में श्रमण संघीय सलाहकार दिनेश मुनि ने मूलतः गदग (कर्नाटक) निवासी 19 वर्षीय बाल ब्रह्मचारी श्रुति लुंकड़ को दीक्षा मंत्र प्रदान करते हुए ओघा प्रदान कर संयम पथ अंगीकार करवाया। मुमुक्षु श्रुति का नया नाम साध्वी मोक्षदा श्री जी दिया गया । साथ ही नवदीक्षित मोक्षदाश्री को महाश्रमणी साध्वी पुष्पवती की सुशिष्या साध्वी प्रियदर्शना की लघुगुरूबहन साध्वी श्री अर्पिताश्री जी की शिष्या घोषित किया गया।

पुष्करवाणी ग्रुप ने जानकारी देते हुए बताया कि इंचलकरणजी सकल जैन समाज का प्रथम मौका है, जब शहर में जैन दीक्षा संपन्न हुई। इससे पूर्व सुबह वीरथाल का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें वैराग्यवती श्रुति ने उपस्थित साधु-साध्वियों को अपने हाथों से अंतिम बार गोचरी बहराई। इसके पश्चात् मुमुक्षु श्रुति की शोभायात्रा निकाली गई। शहर के विभिन्न मार्गों से होते हुए शोभायात्रा गुरू आनंद पुष्कर देवेन्द्र दरबार

पहुंची। यहाँ मुमुक्षु श्रुति ने सांसारिक जीवन के अपने अंतिम विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज का दिन हजारों खुशियाँ लेकर आया है। चार वर्ष पूर्व देखा गया सपना आज मूर्त रूप लेने जा रहा है। आज व्यक्ति सौ सुखों की कामना करते हुए एक दुःख जीवन में आने पर परेशान हो जाता है। वह यह नहीं सोचता कि उसके पास 99 सुख तो है, फिर भी वह दुःखी रहता है। बस यही मेरे सांसारिक जीवन को छोड़ने की प्रेरणा बनी और शाश्वत सुख के राज को समझकर मैं संयम की दिशा में चल पड़ी। मुमुक्षु ने सांसारिक जीवन में हुई भूलों के लिए अपने माता-पिता और श्रावक-श्राविका समाज से क्षमा याचना की और दीक्षाविधि के लिए प्रस्थान किया।

सलाहकार पूज्य श्री दिनेश मुनि द्वारा मंगलपाठ सुनने के बाद मुमुक्षु ने जैसे ही वेश परिवर्तन एवं केशलोचन कर पांडाल में प्रवेश किया तो माहौल में श्रद्धाभर आई। सांसारिक परिधानों को त्याग केसर युक्त श्वेत वस्त्रों से सज्जित मुमुक्षु ने सभी संतवृंदों व साध्वीवृंदों को तीन बार वंदन करने के पश्चात् आशीर्वाद लिया और पुनः सभी से क्षमायाचना करते हुए माता-पिता, श्रीसंघी से अनुमति लेकर दीक्षा प्रदाता श्री दिनेशमुनि से दीक्षा प्रदान करने की विनती की।

इसके पश्चात् करेमि भंते का पाठ दीक्षा प्रदाता सलाहकार श्री दिनेशमुनि जी ने दीक्षार्थी को पढ़ाया। तत्पश्चात् नवदीक्षिता के शिखा का लोच महासाध्वी प्रियदर्शना व साध्वी रत्नज्योति जी द्वारा किया गया।

समारोह में वीरपिता प्रवीण लुंकड़, वीरमातेश्वरी मोनादेवी लूकंड़, भाई प्रतीक व बहिन रक्षा लूंकड़ का श्री संघ के पदाधिकारी अध्यक्ष पद्म खाबिया, मंत्री महावीर बोर्दिया, उपाध्यक्ष मीठालाल लूंकड़, सदस्य गौतमचंद मुथा, अशोक सालेचा व जीवनसिंह पुनमिया सहित इत्यादि सदस्यों ने अभिनंदन पत्र, शॉल और माला प्रदान कर बहुमान किया। देश-प्रदेश के दूर सुदूर प्रांतों से समागत अतिथियों का भी श्री संघ इंचलकरणजी की तरफ से 'शाब्दिक स्वागत' किया गया। संभवतया जैन समाज की प्रथम दीक्षा महोत्सव था जिसमें कोई भी अतिथि दीर्घा नहीं था

और न ही किसी महानुभाव का स्वागत शाल-माला से किया गया।

सलाहकार दिनेश मुनि ने मोक्षदाश्री को संबोधित करते हुए कहा कि संयम के प्रति जागरूकता और निर्देश संयम से प्रत्येक क्रिया तुम्हें करनी है। जागरूकता रखनी है। आत्मशोधन की प्रक्रिया ही दीक्षा है।

डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि, युवामनीषी श्री गौरव मुनि, ओजस्वी महासाध्वी श्री रत्नज्योति जी म.सा., उपप्रवर्तिनी महासाध्वी श्री प्रतिभाकुंवर जी म. सा., महासाध्वी श्री वीरकान्ता जी म. सा.,महासाध्वी मणिप्रभा जी म. सा., साध्वी श्री पीयूषदर्शना जी म.सा. ने नवदीक्षिता को शुभकामनाएं प्रेषित की।

समारोह का सफल संचालन कवि ओम आचार्य द्वारा किया गया। वहीं स्वागत भाषण की रस्म अध्यक्ष पद्म खाबिया व धन्यवाद मंत्री महावीर बोर्दिया ने दिया।

श्रद्धांजली

धर्मनिष्ठ सुसावक श्री रवीन्द्र जैन सुपुत्र श्री पारसदास जैन का अस्वस्थता के पश्चात् 29 जनवरी 2017 को समाना मंडी में देहावसान हो गया।

आप समाना मंडी में सामाजिक कार्यो में सदैव अग्रणी रहे। फ्री आई केम्प, बालिकाओं के विवाह, जैन धर्मशाला निर्माण व साधु-साध्वियों की वैयावच्च करने में आप सदैव तत्पर रहे। श्री सुरेन्द्र कुमार जी जैन ने बताया कि आपने 'चरम मंगल' को 2100 रूपये की राशि ज्ञान पूजा हेतु प्रदान की।

'चरम मंगल' परिवार दिवंगत आत्मा की सद्गति हेतु प्रार्थना करते हुए श्रद्धांजली अर्पित करता है।

परिचय-चरम मंगल परिवार

सदस्य स.	नाम	स्थान	अनुदान
A1108	श्री पुनीत जैन	शामली	2100.00
A1109	श्री अनिल कुमार जैन	कानपुर	2100.00
A1110	श्री रजनीश जैन	लुधियाना	2100.00
A1111	श्री मुकेश जैन	शामली	2100.00
A1112	श्री राकेश जैन	कानपुर	2100.00
A1113	श्री महावीर जैन	कानपुर	2100.00
A1114	श्री तिलकराज जैन	कानपुर	2100.00
A1115	श्री हिरेन महेशचन्द्र सेठ	कानपुर	2100.00
A1116	श्री गविश सिंहल	दिल्ली	2100.00
A1117	श्री राजकुमार गुप्ता	मुज्जफ्फरनगर	2100.00
A1118	श्रीमति सोनिका राजेश जैन	अमृतसर	2100.00
A1119	श्रीमति सरिता अनिलकुमार जैन	मुज्जफ्फरनगर	2100.00
A1120	श्री दिलीप लीलाचन्द पारख	पूना	2100.00
A1121	श्री नरेशपाल सिंह	मेरठ	2100.00
A1122	श्री अनुराग जैन	मुज्जफ्फरनगर	2100.00
A1123	श्री विरेन्द्र कुमार तातेड़	मेरठ	2100.00
A1124	डॉ. रेखा जैन	कुरूक्षेत्र	2100.00
A1125	श्रीमति सुमन जैन	कुरूक्षेत्र	2100.00
A1126	श्री महावीर प्रसाद जैन	सोनीपत	1000.00
A1127	श्री श्रीपाल जैन	सोनीपत	2100.00
A1128	श्रीमति निर्मला जैन	सोनीपत	2100.00
A1129	श्री मुकेश जैन	सोनीपत	2100.00
A1130	श्री ललित शर्मा	जोधपुर	2100.00
A1131	श्रीमति सीमा नाहर	बैंगलूरू	2100.00
A1132	श्री गौतम कांकरिया	अहमदाबाद	2100.00

A1133	श्री दीपक पगारिया	चैन्नई	2100.00
A1134	श्री लाल बाबा जी	बीकानेर	2100.00
A1135	श्री महेन्द्र कुमार जैन	दिल्ली	2100.00
A1136	श्रीमति मोना जैन	दिल्ली	2100.00
A1137	श्रीमति रीना कैलाश जैन	दिल्ली	2100.00
A1138	श्री आनंद जैन	दिल्ली	2100.00
A1139	श्री शेखरचन्द जैन	दिल्ली	2100.00
A1140	श्री परिणय जैन	दिल्ली	2100.00
A1141	श्री राजेन्द्र जैन	दिल्ली	2100.00
A1142	श्री विपुल जैन	फरीदाबाद	2100.00
A1143	श्री प्रतापसिंह मेहता	नोएडा	2100.00
A1144	श्री अंजू जैन	नोएडा	2100.00
A1145	श्री सुधीर जैन	नोएडा	2100.00
A1146	श्री शरद जैन	नोएडा	2100.00
A1147	श्रीमति राखी स्वनय	दिल्ली	2100.00
A1148	श्रीमति क्षमा जैन	खतौली	2100.00
A1149	श्री हुकमीचंद पारख	जोधपुर	2100.00
A1150	श्री किशोर छाजेड़	नागपुर	2100.00
A1151	श्री महेश जैन	नई दिल्ली	2100.00
A1152	श्री मंजू छाबड़ा	नई दिल्ली	2100.00
A1153	जय सतगुरू देव महाराज	फरीदाबाद	2100.00
A1154	श्रीमति शीतल सुराणा	चैन्नई	2100.00
A1155	डॉ. संगीता जैन	हिसार	2100.00
A1156	श्री राजेश प्रीतेश नाहर	पूना	2100.00
A1157	श्री एल.सी. मेहता	फरीदाबाद	2100.00
A1158	मुगदिया 'स नम्रता स्वीट्स	औरंगाबाद	2100.00
A1159	श्री संदीप ताराचंद बेदमुथा	जलगांव	2100.00
A1160	श्री फूलपगर मांगीलाल चैनराज	औरंगाबाद	2100.00

A1161	श्री मीठालाल रतनचंद कांकरिया	औरंगाबाद	2100.00
A1162	श्री राजेश सांखला	आगरा	2100.00
A1163	श्री महेन्द्र सिंह जैन	आगरा	2100.00
A1164	श्री अशोक कुमार जैन	आगरा केन्ट	2100.00
A1165	श्री निशीत जैन	पंचकुला	2100.00
A1166	श्री सुशील जैन	आगरा	2100.00
A1167	श्री मुकेश जैन	आगरा	2100.00
A1168	श्री सुभाष चन्द्र जैन	मेरठ	2100.00
A1169	श्री निर्मल पारख	मदुरई	2100.00
A1170	श्री सुशील गुप्ता	आगरा	2100.00
A1171	श्री संजीव सुराणा	आगरा	2100.00
A1172	श्री संजीव कुमार जैन	आगरा	2100.00
A1173	श्री राजीव जैन	नोएडा	2100.00
A1174	श्री निर्मलचन्द्र कोचर	जयपुर	2100.00
A1175	श्री वैभव जैन	आगरा	2100.00
A1176	श्री नरेश कुमार जैन	आगरा	2100.00
A1177	श्री अशोक चोपड़ा	औरंगाबाद	2100.00
A1178	श्री गोपाल कुमार जैन	फिरोज़ाबाद	2100.00
A1179	देविका आहुजा	आगरा	2100.00
A1180	श्री मनीष जैन	आगरा	2100.00
A1181	श्री मोहन कुमार सिंह	आगरा	2100.00
A1182	श्री अग्रिम जैन	आगरा	2100.00
A1183	श्रीमति शीला जैन	आगरा	2100.00
A1184	श्रीमति नीलम जैन	आगरा	2100.00
A1185	श्री अजय जैन	आगरा	2100.00
A1186	श्री नीरज जैन	आगरा	2100.00
A1187	श्री नवीन कुमार जैन	आगरा	2100.00
A1188	श्री अशोक कोठारी	आगरा	2100.00